मूल्य-80/-

स्कूली शिक्षा में समर्थन हेतु समर्पित संस्था

WINGS2FLY
SOCIETY
COME LETS FLY

H. No. 580/1 Street 17 B Durga Chowk,
Adarsh Nagar, Mowa Raipur (CG) 492007
email : wings2flysociety@gmail.com

अनुक्रमाणिका

बचपन 5

करवाचौथ 7

गोबरधन 9

मुनिया रानी 10

छोटी बहन 11

साफ-सफाई 13

मुर्गा बाँग लगाता है- 14

बेशरम का फूल 15

चाचा नेहरू 16

अधूरी कहानी पूरी करो 17

किताब 17

अनंत शुक्ला, कक्षा चौथी, केन्द्रीय विद्यालय मेडक हैदराबाद द्वारा पूरी की गयी कहानी 19

यशवंत कुमार चौधरी द्वारा पूरी की गयी कहानी 20

संतोष कुमार कौशिक द्वारा पूरी की गयी कहानी 21

अगले अंक के लिए अधूरी कहानी 22

वह गांव वाला आदमी.. 22

ठंडी 24

नाचव 26

दीवाली 27

कोरोना तुम कब जाओगे?? 29

नटखट नन्ही 30

पेड़ों में भी है जान 32

अच्छे मेरे मामा जी 34

तितलियाँ गायब 35

हमारे पौराणिक पात्र- आर्यभट महान गणितज्ञ 36

समय बड़ा बलवान 39

जंगल 40

जिंदगी में ऐसे पल भी आते है 42

क्रिसमस गिफ़्ट....44
चिड़िया आई....48
मेरा परिवार....49
अब स्कूल खुले....51
अम्बे माँ का जगराता....52
शिक्षा....54
प्यार लुटाते दीप....55
चच्चा जी....56
चक्रवर्ती राजगोपालाचारी....58
कलम....61
पढ़ई तुँहर द्वार....63
पंचतंत्र की कथाएँ- धूर्तों की संगत....65
चूहा....68
प्यारा बचपन....69
बिना नाम की नदी....71
अंतर्मन में दीप जला लें....73
बिल्ली गयी दिल्ली....74
धनतेरस....75

हमारे प्रेरणास्रोत- पंडित मदन मोहन मालवीय....76
सच की राह....78
प्रतिमा और प्रति- माँ....80
मेरा देश संवर रहा है....83
धान के रुनझुन मोला संगीत लागे जी....85
नवाचार- मृणशिल्प से कला कौशल का विकास....86
मीठी वाणी....88
मेरा देश है महान....90
Merry Christmas....92
चित्र देख कर कहानी लिखो....94
अपर्णा वर्मा, भानुप्रतापपुर, कांकेर द्वारा भेजी गई कहानी....95

रजनी शर्मा बस्तरिया द्वारा भेजी गई कहानी 96

होनजोक मेंढ़क 96

संतोष कुमार कौशिक द्वारा भेजी गई कहानी 98

बतख और मेंढक 98

यशवंत कुमार चौधरी द्वारा भेजी गई कहानी 99

अगले अंक की कहानी हेतु चित्र 100

नदियाँ 101

भारत देश हमारा 102

कुकुर 103

सफलता की कहानी- व्यवहार में परिवर्तन 104

वंदना 106

जन्मदिन 107

तुम बहुत याद आते हो 108

सजीव एंव निर्जीव 109

गाँव के सुरता 111

हारेगा कोरोना 112

भाखा जनऊला 114

संपादक

डॉ. आलोक शुक्ला

सह-संपादक

डॉ. एम सुधीश, डॉ. सुधीर श्रीवास्तव, प्रीति सिंह, ताराचंद जायसवाल, बलदाऊ राम साहू, नीलेश वर्मा, धारा यादव, द्रोण साहू, डॉ. शिप्रा बेग, वृंदा पंचभाई, रीता मंडल, कंचन लता यादव, पुर्णेश डडसेना, कविता आचार्य

ई-पत्रिका

पुनीत मंगल

आवरण पृष्ठ

हेमंत साहू

प्यारे बच्चो,

दिसंबर माह आ गया है और ठंड भी शुरू हो गयी है. वर्ष का यह आख़िरी माह है और इस वर्ष हम सभी को एक बेहद अजीब सा अनुभव हुआ है. हम न ही स्कूल जा सकते हैं, न ही अपने दोस्तों से हाथ मिला सकते हैं, सभी से दूरी बनाकर रहना है, सदैव मास्क लगाए रखना है और हाथ भी नियमित रूप से साबुन लगाकर धोते रहना है.

एक छोटे से वायरस ने पूरी दुनिया में तहलका मचा रखा है. संकट के इस समय में भी आपको अपनी पढाई जारी रखनी चाहिए. सीखी हुई चीजों को न भूलें| आपके स्कूल में आने वाले किलोल का सब्सक्रिप्शन यदि समाप्त होने वाला हो तो अपने शिक्षक को सूचित कर उसको अगले वर्ष के लिए रिन्यू करवा लें. किलोल से सीखी हुई बातों पर अपने दोस्तों के साथ चर्चा कियाकरें.

चलिए हम एक नए वर्ष की प्रतीक्षा करें और यह प्रार्थना करें कि सब कुछ जल्दी से जल्दी सामान्य हो जाए.

आपका

आलोक शुक्ला

बचपन

रचनाकार-सपना यदु

अल्हड़ सी अटखेली लेकर,
आया बचपन झूम-झूम कर.

पेड़ों की डालों पर झूलें,
इधर-उधर उस पर लटके.
उछल-कूद करते रहते हैं,
देखो लड़की और लड़के..

चोर-पुलिस, बिल्लस, पासा,
खेलें छुपा-छुपी, नदी-पहाड़.
गिल्ली डंडे से है मारे,
देखो खिड़की और किवाड़..

कागज की है नाव बनाते,
बारिश की पानी में बहाते.
रिमझिम-रिमझिम पानी से,
भीग-भीग कर खूब नहाते..

लोहे, पुट्ठे और कनस्तर से,
देखो ये बाजा बजाते.
नाचे गाए निकाले बारात,
गुड्डा-गुड्डी की ब्याह रचाते..

मारे पत्थर और तोड़े आम,
तोड़े इमली और तोड़े जाम.
मिल बांट कर है सब खाते,
लेते नहीं है कोई दाम..

देखो हाथ डंडी पकड़कर,
साइकिल का टायर चलाते.
पानी और दलदल में जाकर,
कीचड़ में फिसल पट्टी बनाते..

पहन के साड़ी देखो मुन्नी,
बनती है, गुड़िया की मम्मी.
गोदी में बिठा खाना खिलाती,
लोरी गाती और सुलाती..

अठारह हो या उम्र हो पचपन,.
प्यारा लगता सबको बचपन..

करवाचौथ

रचनाकार-प्रिया देवांगन "प्रियू"

करवा निर्जल व्रत है करती.
भूख-प्यास को वह है सहती..
रात चाँद की दर्शन करती.
जीवन के कष्टों को हरती..

सजधज नारी पूजा करती.
प्यार पिया के हिय में भरती..
कानों में पहने सब बाली.
माँगो में सजती है लाली..

हो दीर्घायु पति हे देवा.
नित्य करूँ मैं प्रभु की सेवा..
चरण स्पर्श कर आशीषें पाती.
जीवन में खुशियाँ है लाती..

साजन सजनी लगते प्यारे.
आँगन उतरे चाँद सितारे..
शिव गौरी को भोग लगाते.
पकवानों से थाल सजाते..

शिव गौरी को नीर चढ़ाये.
पति सँग पावन प्रीत बढ़ाये..
जनम-जनम का साथ निभाये.
घर आँगन में खुशियाँ लाये..

गोबरधन

रचनाकार- नेमेन्द्र कुमार गजेन्द्र

गोबर धन हे गाँव के, झन कचरा मा सान.
खेत खार मा छिंच दे, होही सुग्घर धान..
होही सुग्घर धान, सबो के कोठी भरही.
भूख प्यास के रोग, गाँव ले दुरिहा टरही..
भरही सबके पेट, अन्न पूर्णा ह बरोबर.
झन कचरा मा सान, गाँव के धन हे गोबर..

मुनिया रानी

रचनाकार-महेन्द्र देवांगन "माटी"

भोली भाली मुनिया रानी. पीती थी वह दिनभर पानी..
दादा के सिर पर चढ़ जाती. बड़े मजे से गाना गाती..

दादा दादी ताऊ भैया. नाच नचाती ताता थैया..
खेल खिलौने रोज मँगाती. हाथों अपने रंग लगाती..

भैया से वह झगड़ा करती. पर बिल्ली से ज्यादा डरती..
नकल सभी का अच्छा करती. नल में जाकर पानी भरती..

दादी की वह प्यारी बेटी. साथ उसी के रहती लेटी..
कथा कहानी रोज सुनाती. तभी नींद में वह सो जाती..

छोटी बहन

रचनाकार-टीकेश्वर सिन्हा "गब्दीवाला"

बिट्टू और सुम्मी आज बहुत खुश थे, उनकी लल्ली दीदी की शादी जो थी. बारात का आगमन हो चुका था. उनके मम्मी-पापा एवं घर के अन्य सदस्य बारातियों के स्वागत में व्यस्त थे. घर की सजावट देखते ही बनती थी. घर मेहमानों से भरा हुआ था. लाउडस्पीकर में चल रहे विवाहगीतों का आनंद सारा गाँव ले रहा था. बच्चे भी बड़े आनंदित थे. वे अपनी शरारतों और खेलकूद में मगन थे. तभी एक आवाज आई-' बिट्टू, इधर आओ, खाना खा लो, फिर खेलना. "हाँ मम्मी, आ रहा हूँ' 'बिट्टू बोला. हाथ धोकर वह खाना खाने बैठ गया. सुम्मी भी हाथ धोकर बिट्टू के पास चटाई पर बैठ गयी.

बिट्टू और सुम्मी ने खाना खाया. खाने के बाद बिट्टू को शरारत सूझी, कटोरी में रखी मिर्च उसने सुम्मी के चेहरे पर डाल दी. ' मम्मी.. . मम्मी.. . ' चीखती हुई सुम्मी इधर-उधर भागने लगी.

'क्या हुआ सुम्मी. क्या हुआ?' मम्मी ने मामला समझा और सुम्मी की आँखों को ठण्डे पानी से धोया. डॉक्टर को बुलवाया गया. डॉक्टर ने सुम्मी की आँखों को फिर एक बार धोकर दवाई डाली. आँख में पट्टी बांध दी. सभी सुम्मी के पास ही थे. बिट्टू भी चुपचाप खड़ा था. डॉक्टर के जाने के बाद मम्मी-पापा सुम्मी से पूछने लगे-' सुम्मी, किसने डाली मिर्च तुम्हारी आँखों

में?' अब बिट्टू की सिट्टी-पिट्टी गुम हो गई. सुम्मी खामोश रही. मम्मी ने पुनः पूछा' बिट्टू भैया ने डाली क्या?

' नहीं... नहीं.... मम्मी, बिट्टू भैया ने नहीं डाली. ' सुम्मी बोली. ' मम्मी, मैंने खुद ही मिर्च को हल्दी समझकर अपने चेहरे पर लगा लिया था.' बिट्टू समझ ही नहीं पा रहा था कि सुम्मी क्या कह रही है. ' मम्मी, मैं सोऊँगी. मुझे नींद आ रही है. ' सुम्मी ने कहा तो सभी लोग कमरे से चले गये.

बिट्टू सुम्मी के कमरे में आया और फफक कर रोने लगा. अब बिट्टू को अपनी शरारत पर बहुत दुःख हो रहा था. सुम्मी को रोने की आवाज सुनाई दी. बोली-' कौन?' सिसकते हुए बिट्टू बोला-' सुम्मी, मैं हूँ बिट्टू. ' सुम्मी मुस्कुराती हुई बोली-' बिट्टू भैया, तुम क्यों रो रहे हो?' अपनी गलती स्वीकारते हुए बिट्टू बड़ी मुश्किल से बोल पाया-' बहन, मुझे माफ करना. मुझसे गलती हो गयी. लेकिन तुमने झूठ क्यों बोला सुम्मी? तुम्हारी आँखों में मिर्च तो मैंने लगाई थी. ' सुम्मी भीगी आवाज में बोली-' भैया, अगर मैं तुम्हारा नाम बता देती तो मम्मी तुम्हें सजा देतीं. छोटी बहन के कारण बड़ा भाई डाँट खाये, यह मैं नहीं चाहती. '

सुम्मी की बातें सुनकर बिट्टू को अपनी करनी पर बहुत पश्चाताप हो रहा था. अपने प्रति छोटी बहन का प्रेम देख उसकी आँखें भर आईं. 'मुझे माफ करना मेरी बहन. मैं अब कभी ऐसी गलती नहीं करूँगा. ' बिट्टू ने छोटी बहन को गले लगा लिया.

साफ-सफाई

रचनाकार- सतीश चन्द्र भगत

सब कहते हैं, हमसे भाई.
गंदगी तुमने, क्यों फैलाई.

घर- आँगन के, साथ-साथ तू.
मन की करना, साफ-सफाई.

घर के बाहर कूड़ेदानी.
रखा करो जी, कहती नानी.

स्वास्थ्य खिलेगा, फूलों जैसा.
खुशी- खुशी से हमने ठाना.

मुर्गा बाँग लगाता है

रचनाकार- गीता उपाध्याय "मंजरी"

अभी उजाला हुआ नहीं है, लेकिन नित उठ जाता है.
सूरज के आने से पहले, मुर्गा बाँग लगाता है..

सोए हुए सभी लोगों को, झटपट सदा उठाता है.
कभी नहीं यह नागा करता, अपना फर्ज निभाता है..

किसने इसको काम दिया है, जिसको रोज निभाता है?
घूम घूम ऊपर चढ़ चढ़ कर, मुर्गा क्यों चिल्लाता है?

गोल गोल अपनी ऑखों को, पहले खूब घुमाता है.
अगल बगल को पहले देखे, तब ही कदम बढ़ाता है..

चाल बादशाहों के जैसी, रुक रुक पाँव उठाता है.
सिर पर लाल कलंगी पगड़ी, जिसको खूब हिलाता है..

दादा बनकर बहुत घूमता, सबको डांट पिलाता है.
देखे दूजा मुर्गा तो झट, लड़ने को भिड़ जाता है..

बेशरम का फूल

रचनाकार- नंदिनी राजपूत

बेशरम हूँ तो क्या हुआ,
मैं भी तो एक गुल हूँ.
लोगो को पसंद आता नहीं,
लेकिन मैं गुलाबसी फूल हूँ.

तालाबोंके किनारे रहता हूँ,
कितनी तकलीफों को सहता हूँ.
लोग मुझे जला देते हैं,
फिर भी उफ्फ नहीं कहता हूँ ।

गुलाब के जैसा सुगंधित नहीं,
फिर भी गुलाबसी रंग है।
कीटनाशक के लिए उपयोगी हूँ,
मुझसे ही फसलें जीवंत हैं.

बस यही मेरी पहचान है,
बेशरम मेरा नाम है.

चाचा नेहरू

रचनाकार- वसुंधरा कुर्रे

हम नन्हे- मुन्ने प्यारे बच्चे,
चाचा के थे राज दुलारे.
चाचा करते थे हमें प्यार,
और देते थे हमें,
रंग -बिरंगे गुब्बारे प्यारे.
और चाचा को थे बच्चे प्यारे,
गुलाब ही सब फूलों से थे प्यारे,
इनको लगता इतने प्यारे.
अचकन में गुलाब फूल लगाए,
हमेशा ही मुस्कुराते रहते.
चाचा अपना जन्मदिन आज,
हम बच्चों को दे दिए दान में.
और नाम दिए उनको बाल दिवस,
बाल दिवस आज हमारा है.
सब त्योहारों से प्यारा है,
आओ, हम सब मिलकर
मनाएँ बाल दिवस.

अधूरी कहानी पूरी करो

पिछले अंक में हमने आपको यह अधूरी कहानी पूरी करने के लिये दी थी -

किताब

छुट्टी की घंटी बजी और सारे बच्चे हो - हो करते स्कूल से बाहर निकल आए. संदीप और किशोर साथ - साथ बाहर निकले. दोनों यह बात कर रहे थे कि आज गणित में गृहकार्य के जो प्रश्न दिए गए हैं उन्हें कैसे हल किया जाए.

किशोर को गणित में बहुत कठिनाई होती थी. उसने संदीप ने कहा इन सवालों को हल करने में तुम मेरी मदद करना. संदीप ने कहा जरूर करूंगा लेकिन अभी तक मेरे पास गणित की किताब नहीं है. किशोर ने कहा, कोई बात नहीं, मैं शाम को तुम्हारे घर आ जाऊंगा. दोनों मिलकर सवाल हल कर लेंगे.

घर लौटकर संदीप किशोर की प्रतीक्षा करता रहा. बहुत देर हो गई, किशोर नहीं आया. अंधेरा होने को आ गया. अब संदीप को घबराहट होने लगी. उसे लगा यदि किशोर नहीं आया तो सवाल बन नहीं पाएंगे. वह घर में नहीं बताना चाहता था कि उसके पास गणित की किताब नहीं है. उसे मालूम था कि पिताजी अभी किताबें खरीद नहीं पाएंगे. ऐसे में उन्हें परेशान करना अच्छा नहीं होगा.

उसने किशोर के घर जाने का निश्चय किया. अपनी मां को उसने बताया कि मैं और किशोर कुछ देर साथ-साथ पढ़ना चाहते हैं. मैं उसे घर जा रहा हूं.

मां ने कहा, ठीक है लेकिन जल्दी आ जाना. संदीप अपनी कॉपी और कलम लेकर दौड़ता हुआ किशोर के घर पहुंचा. गेट पर ही चौकीदार खड़ा था. वह संदीप को पहचानता नहीं था. उसने पूछा, तुम कौन हो और यहां क्यों आए हो?

संदीप ने हांफते हुए कहा कि वह किशोर के साथ ही पढ़ता है. आज दोनों को मिलकर काम करना है.

चौकीदार ने कहा, मैं अंदर से पूछ कर आता हूं. तुम यहीं रुको.

संदीप गेट पर खड़ा रहा.

चौकीदार ने लौटकर कहा कि किशोर के पिताजी ने अंदर आने से मना किया है. संदीप अवाक रह गया, कुछ कह ना सका. उसे समझ में नहीं आ रहा था कि अब क्या करूं.

अनंत शुक्ला, कक्षा चौथी, केन्द्रीय विद्यालय मेडक हैदराबाद द्वारा पूरी की गयी कहानी

संदीप बहुत देर तक किशोर के घर के बाहर उसके आने का इंतजार करता रहा. फिर बहुत भारी मन से अपने घर लौट आया. बहुत देर रात तक वो यही सोचता रहा कि कल स्कूल मे गुरूजी से क्या कहेगा.

यही सोचते हूए कब उसकी आंख लग गयी उसे पता ही नही चला.

सूबह उठते ही उसने यही विचार किया की वो सबकूछ गूरूजी से बता देगा कि उसके पास किताब नही है और उसके पिता के पास इतने पैसे नही है कि वो उसे किताब खरीद कर दे सके.

स्कूल पहूंचते ही गुरूजी के कक्ष में जाकर उसने सारी बात बता दी

गुरु जी उसकी सच्चाई पर बहुत ही खूश हूए और उन्होंने अपनी किताब जो उन्हें स्कूल की तरफ से दी गयी उसे दे दी. संदीप बहुत खुश हुआ और गूरूजी की दी किताब से उसने पढाई की और कक्षा मे प्रथम आया.

तब से गूरूजी ने संदीप जैसे बच्चों के लिए संस्था से आवेदन किया कि ऐसे बच्चों की मदद की जाए.

यशवंत कुमार चौधरी द्वारा पूरी की गयी कहानी

संदीप ने सोचा ही नहीं था कि उसे इस तरह का जबाब मिलेगा. उसकी योजना पर पानी फिर गया. वह काफी आहत हुआ था. अब उसके सामने दुविधा की स्थिति थी. उसके पास किताब नहीं थी और अगले दिन होमवर्क दिखाना था. उसे सूझ नहीं रहा था कि अब क्या करे? उदास होकर संदीप वापस घर की ओर चल पड़ा. रास्ते में उसे मोनिका मिली जो उसके साथ ही पढ़ती थी. मोनिका ने संदीप से पूछा: तुमने गृहकार्य कर लिया क्या? संदीप ने धीरे से कहा- नहीं मेरे पास किताब नहीं है इसलिए नहीं कर पाया. संदीप की बात सुनकर मोनिका ने अपनी पुरानी गणित की किताब संदीप को दे दी. संदीप की समस्या हल हो गई. उसने मोनिका को धन्यवाद दिया और घर लौटकर गृहकार्य पूरा कर लिया.

संतोष कुमार कौशिक द्वारा पूरी की गयी कहानी

घर के अंदर प्रवेश नहीं दिए जाने पर संदीप को समझ में नहीं आ रहा था कि अब वह क्या करे. वह सोच रहा था कि मैं गरीब हूँ और किशोर अमीर है इसीलिए मुझे घर में नहीं आने दिया. संदीप उदास होकर लौटने लगा. तभी किशोर ने संदीप को खिड़की से देखा और कहा- संदीप, रुको मैं अपने पिताजी से बात करता हूँ. संदीप रुक गया. किशोर ने अपने पिताजी से जाकर कहा - पिताजी संदीप को मैंनें बुलाया था. मैं गणित में कमजोर हूँ. होमवर्क करने में वह मेरी मदद करेगा. संदीप के पास गणित की पुस्तक नहीं है. उसके पिताजी किताब नहीं ले पाए हैं. हम दोनों साथ बैठकर गृह कार्य करेंगे. पिताजी, संदीप गरीब है पर वह ईमानदार और अच्छा लड़का है. संदीप को घर आने की इजाजत दीजिए. किशोर की बातें सुनकर पिताजी ने कहा-बेटा, संदीप को घर बुलाकर साथ-साथ गृह कार्य करो. किशोर ने संदीप को बुलाया और दोनों ने मिलकर होमवर्क पूरा किया.

किशोर के पिताजी ने मन ही मन संदीप की सहायता करने को सोची. उन्होंने संदीप के लिए किताबों का सेट मँगवाया. संदीप पुस्तकें लेने को तैयार नहीं हुआ लेकिन किशोर ने संदीप को मना लिया. संदीप ने पुस्तकें ले लीं और किशोर एवं उसके पिताजी को धन्यवाद देकर अपने घर लौट गया.

अगले अंक के लिए अधूरी कहानी

वह गांव वाला आदमी.. .

उस दिन भी आनंद सर को स्कूल से निकलने में देर हो गई. बच्चों को प्रैक्टिकल कराते - कराते प्राय: उन्हें रोज ही देर हो जाया करती थी. बाहर निकलकर उन्होंने देखा पूरे स्कूल में सन्नाटा बिखरा पड़ा था. गेट पर खड़ा चौकीदार उन्हीं की तरफ देख रहा था मानो कह रहा हो, आप जाएं तो ताला बन्द करूं. उन्होंने अपनी साइकिल उठाई और स्कूल से बाहर निकल आए.

उनका घर कुंदनपुर में था जो यहां से लगभग दस से बारह किलोमीटर दूर था. लगभग एक घंटा तो लग ही जाता था इस रास्ते को तय करने में. रास्ते में एक बड़ी नदी पड़ती थी. इसे पार करने के बाद लगभग दो - तीन किलोमीटर का रास्ता काफी चढ़ाव भरा था. चढ़ाव पर उनकी साइकिल धीरे - धीरे चल रही थी. अचानक उन्होंने देखा कि एक व्यक्ति दौड़ते हुए उन्हें पार करके आगे निकला. वह लगभग हांफ रहा था लेकिन फिर भी चलने के बजाय दौड़ रहा था. शक्ल - सूरत से वह गांव का व्यक्ति लग रहा था. घुटनों तक एक मैली - सी धोती और ऊपर आधी बांह का कुर्ता उसने पहन रखा था. आनंद सर को लगा की कुछ तो बात है. उन्होंने उस व्यक्ति को पुकारा और रुकने को कहा. उसके नजदीक पहुंच कर उन्होंने पूछा, क्या बात है भाई, क्यों दौड़ रहे हो. उसने बताया कि उसे कुंदनपुर जाना है. वहां से सात बजे एक बस निकलती है. उस बस से उसे अपने गांव जाना है. गांव में उसका परिवार रहता है. उसे आज ही ये खबर मिली है कि उसकी बच्ची बीमार है. यदि बस नहीं मिलती तो वह अपने घर नहीं पहुंच पाएगा.

ओह!!! आनंद सर एक क्षण के लिए चुप हो गए. उन्होंने अपनी घड़ी देखी. साढ़े छह बज रहे थे. उन्होंने सोचा, यह आदमी कितना भी दौड़े, सात बजे तक कुंदनपुर नहीं पहुंच सकता.

उन्होंने उस ग्रामीण से कहा, भाई ! मैं भी कुंदनपुर ही जा रहा हूं. तुम साइकिल पर पीछे बैठो. मैं कोशिश करता हूं कि तुम्हें तुम्हारी बस मिल जाए. उस व्यक्ति को कुछ संकोच हुआ. उसने कहा, मैं चला जाऊंगा साहेब, आप तकलीफ मत उठाइए. आनंद ने कहा, तकलीफ की कोई बात नहीं है. तुम बैठो, हम चलते हैं. और फिर उसे अपनी साइकिल के कैरियर पर बिठाकर वे कुंदनपुर की ओर चल पड़े. उनसे जितना तेज चलाते बन रहा था वे साइकिल चला रहे थे.

कुंदनपुर पहुंचते-पहुंचते आनंद सर पसीने से नहा चुके थे. वे उस व्यक्ति को लेकर सीधे बस स्टॉप पहुंचे. संयोग से स्टॉप पर बस खड़ी थी. बस को देखते ही उस आदमी का चेहरा खिल उठा. उसकी खुशी देखकर आनंद सर भी अपनी तकलीफ भूल गए. उनके चेहरे पर थकान के बाद भी एक प्यारी सी तसल्ली से भरी मुस्कुराहट आ गई. उन्होंने उससे कहा, भाई देखो, तुम्हारी बस खड़ी है. अब तुम बस में आराम से जा सकते हो. वह व्यक्ति कुछ कह ना सका लेकिन उसके चेहरे पर कृतज्ञता के अद्भुत भाव थे. उसने अपने कुर्ते की जेब से बारह आने निकाले और उसे सर की हाथ में रखते हुए अपने हाथ जोड़ लिए.

आनंद सर उसके इस व्यवहार से गुस्से से भर उठे. उनका चेहरा तमतमा उठा. एक क्षण के लिए उन्हें लगा यह व्यक्ति क्या समझ कर उन्हें पैसे दे रहा है. क्या वे पैसे के लिए उसे बिठाकर लाए हैं. पर तुरंत ही उन्हें लगा उसके चेहरे के भाव तो ऐसे नहीं हैं. उन्हें समझ में नहीं आया कि वे कैसी प्रतिक्रिया व्यक्त करें.

कहानी को इस मोड़ पर छोड़ते हुए हम आपको जिम्मेदारी देते हैं आप इसे पूरा कर हमें माह की 15 तारीख तक ई मेल **kilolmagazine@gmail. com** पर भेज दें. आपके द्वारा भेजी गयी कहानियों को हम किलोल के अगल अंक में प्रकाशित करेंगे

ठंडी

रचनाकार- सपना यदु

देखो भाई ठंडी आई,
प्यारी ओस की बूंदे लाई.
रंग-बिरंगे स्वेटर पहनो,
नरम-गरम ओढो रजाई..

आसमान में बादल छटे हैं,
कोहरा छाया है सब ओर.
थरथर कर सब कांप रहे हैं,
शीत बरसे चारों ओर..

क्या दादी, नानी क्या पोती,
धूप सबको अच्छी लगती.
गरम चाय है सब पीते,
ठंडी अपनी दूर भगाते..

क्या गली और क्या मोहल्ले,
लगे हैं देखो आग सुलगने.
बच्चे, बूढ़े और जवान,
सब मिलकर हैं आग तापते..

सभी किसान खुश हो जाते,
पके फसल देखकर मुस्काते.
मेहनत रंग लाया देखकर,
अपने सारे ख्वाब सजाते हैं..

नाचव

रचनाकार- योगेश्वरी साहू

घूम-घूम के नाचव
झूम झूम के नाचव.

हाथ उठा के नाचव
आंखी मटका नाचव.

कनिहा हला के नाचव
माँदर बजा के नाचव.

मगन हाबन सब झन
नाचव नाचव नाचव.

दीवाली

रचनाकार- नंदिनी राजपूत

जगमग- जगमग आई दीवाली,
घर- घर खुशियाँ लाई दीवाली.

आओ मिलकर दीप जलाएँ,
अंधकार को दूर भगाएँ.

कृष्ण पक्ष की त्रयोदशी आई,
रौशनी घर में खुशियाँ लाई.

तरह- तरह की रंगोली बनाएँ,
घर- आँगन को खूब सजाएँ.

आओ मीठे- मीठे पकवान खाएँ,
सब मिल-जुल खुशियाँ मनाएँ.

चहुँओर दीपक खूब जलाएँ,
दुश्मन- दोस्त एक हो जाएँ.

नए वस्त्र को तन में सजाएँ,
लक्ष्मी पूजा से सुख- शांति पाएँ.

फुलझड़ी, पटाखे कम जलाएँ,
पर्यावरण प्रदूषण दूर भगाएँ.

बड़े- बुजुर्गों का आशीर्वाद पाएँ,
दीपावली खूब धूमधाम से मनाएँ.

कोरोना तुम कब जाओगे??

रचनाकार- निमिशा कुर्रे "विशुद्धि"

होली गई, दीवाली गई,
पर न गई तुम्हारी छाया.
बाहर खेलने भी निकलूँ तो,
मुझको डराती अदृश्य काया.

जनता को कितना तड़पाओगे,
कोरोना तुम कब जाओगे??

स्कूल जाने की तीव्र इच्छा की,
धीमे-धीमे कट गयी पाँखें.
हादसा ये देखकर भी निष्ठुर,
क्यों नम नहीं तुम्हारी आँखें.

खुद हँसकर और कितना रुलाओगे,
कोरोना तुम कब जाओगे??

नटखट नन्ही

1. मैडम: नन्ही, अगर स्कूल के सामने कोई बम रख दे तो तुम क्या करोगी?
   नन्ही : मै'म, थोड़ी देर इंतजार करेंगे अगर कोई ले जाता है तो ठीक है, नहीं तो स्टाफरूम में रख देंगे!.

2. नन्ही: पापा, मुझे एक बात समझ में नहीं आती!
   पापा: कौन सी बात नन्ही?
   नन्ही: सभी लोग आलसी लोगों को क्यों डाँटते रहते हैं? वो तो कुछ करते ही नहीं!!

3. शिक्षक: मैं जो पूछूँ, उसका जवाब फटाफट देना.
   नन्ही: जी सर.. .
   शिक्षक: भारत की राजधानी कहाँ है?
   नन्ही: फटाफट.. .
   इस पर शिक्षक नाराज हो गए.
   नन्ही: आपने ही तो कहा था कि जो पूछूँ, जवाब फटाफट देना.

4. नन्ही आराम से बैठी थी.
   मींटू (नन्ही से): कुछ काम करो.
   नन्ही (मींटू से): मैं गर्मियों में काम नहीं करती हूँ.
   मींटू: और सर्दियों में?
   नन्ही: गर्मियाँ आने का इंतजार!

5. माँ: नन्ही क्या कर रही हो ?
   नन्ही- पढ़ रही हूँ
   माँ- शाबास! क्या पढ रही हो?
   नन्ही: जी माँ फिल्म शोले की स्टोरी.

पेड़ों में भी है जान

रचनाकार- स्नेहलता टोप्पो "स्नेह"

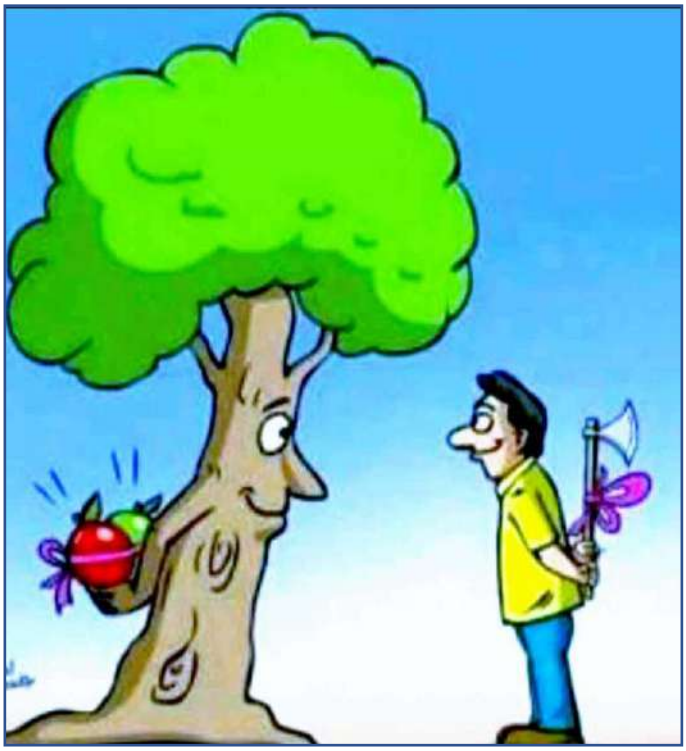

पर्यावरण जिनके दम से,
धरती का अभिमान.
हरे-भरे पादप मत काटो,
इनमें भी है जान.

प्राणवायु नि:शुल्क हैं देते,
दें शीतल पुरवाई.
वर्षा को आकर्षित करते,
इनसे मिले दवाई.
भूमि के अनमोल रतन,
कीमत इनकी पहचान.
हरे-भरे पादप मत काटो,
इनमें भी है जान.

महुआ, लकड़ी, तेंदूपत्ते,
देते मीठे फल.
पेड़ न हों तो सोच रे मानव,
कैसा होगा कल.
साँसों की डोरी पेड़ों से,
चलती है नादान.
हरे-भरे पादप मत काटो,
इनमें भी है जान.

जड़ से फल तक अंग पेड़ के,
होते हैं गुणकारी.
जीव-जगत और सारी सृष्टि,
पेड़ों के आभारी.
पेड़ बिना ये जग बन जाए,
पल भर में शमशान.
हरे-भरे पादप मत काटो,
इनमें भी है जान.

अच्छे मेरे मामा जी

रचनाकार- डॉ. सतीश चन्द्र भगत, बनौली, दरभंगा

अच्छे मेरे मामा जी
टाफी बिस्कुट लाना जी
और मिठाइयाँ भी लाना
खिलौने नए दिलाना जी.

पढ़ते और पढ़ाते जी
नई किताबें लाते जी
कहाँ डपटते खेलों में
अच्छे खेल खिलाते जी.

रूसा- फुल्ली फुल्लर जी
झटपट मेल मनौवल जी
कठिन सवालों को हंसकर
हमको झट बतलाते जी.

गजब निराले मामा जी
हरदम वे मुस्काते जी
हमें सुनाते कथा-कहानी
गीत कभी सुनाते जी.

तितलियाँ गायब

रचनाकार- महेंद्र कुमार वर्मा

सजी धजी तितली जब आती,
सबके मन को वह बहलाती.

फूलों से लेकर रंग सुहाने,
तितली खुद को खूब सजाती.

चले हवा जब खुशबू वाली,
बगिया में तितली इठलाती.

जब आता अंधड़ तूफ़ानी,
तितली पेड़ों में छुप जाती.

बच्चे भागें उसे पकड़ने,
पर तितली हाथ न आती.

उजड़े बाग़ तितलियाँ गायब,
अब किताब तितली दिखलाती.

हमारे पौराणिक पात्र- आर्यभट महान गणितज्ञ

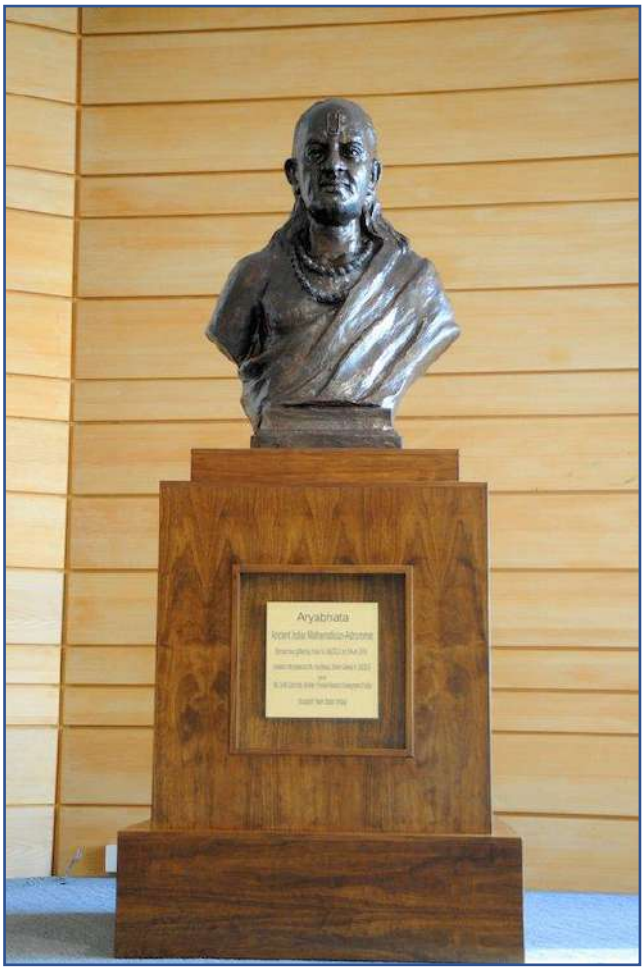

आर्यभट (४७६-५५०) प्राचीन भारत के एक महान गणितज्ञ और ज्योतिषविद् थे. इन्होंने आर्यभटीय ग्रंथ की रचना की जिसमें गणित खगोलशास्त्र और ज्योतिषशास्त्र के अनेक सिद्धांतों का प्रतिपादन है.

आर्यभट ने अपने ग्रन्थ आर्यभटीय में अपना जन्मकाल शक संवत् 398 (476) लिखा है. उनके जन्म का साल तो सुस्पष्ट है परन्तु जन्मस्थान के बारे में स्थिति स्पष्ट नहीं है. कुछ स्रोतों के अनुसार आर्यभट्ट का जन्म महाराष्ट्र के अश्मक प्रदेश में हुआ था और वे उच्च शिक्षा के लिए कुसुमपुरा गए थे. भारतीय गणितज्ञ भास्कर ने कुसुमपुरा की पहचान पाटलिपुत्र (आधुनिक पटना) के रूप में की है.

आर्यभट्ट के कार्यों की जानकारी उनके द्वारा रचित ग्रंथ से मिलती है. इस महान गणितग्ज्ञ ने आर्यभटीय दशगीतिका, तंत्र और आर्यभट्ट सिद्धांत ग्रंथों की रचना की थी. विद्वानों में

‘आर्यभट्ट सिद्धांत’ के बारे में मतभेद हैं. माना जाता है कि ‘आर्यभट्ट सिद्धांत’ का सातवीं शताब्दी में व्यापक उपयोग होता था. अब इस ग्रन्थ के केवल 34 श्लोक ही उपलब्ध हैं और इतना उपयोगी ग्रंथ लुप्त कैसे हो गया इसकी कोई निश्चित जानकारी नहीं है.

अद्भुत प्रतिभा के धनी आर्यभट ने अनेक कठिन प्रश्नों के उत्तर को एक श्लोक में समाहित कर दिया है, गणित के पाँच नियम एक ही श्लोक में प्रस्तुत करने वाले आर्यभट ऐसे प्रथम नक्षत्र वैज्ञानिक थे, जिन्होंने बताया कि पृथ्वी अपनी धुरी पर घूमते हुए सूर्य के चक्कर लगाती है. इन्होंने सूर्यग्रहण एवं चन्द्र ग्रहण होने के वास्तविक कारण की व्याख्या की. आर्यभट को यह ज्ञात था कि चन्द्रमा और दूसरे ग्रह स्वयं प्रकाशमान नहीं हैं, बल्कि सूर्य की किरणें उनमें प्रतिबिंबित होती हैं.

23 वर्ष की आयु में आर्यभट ने ‘आर्यभटीय ग्रंथ’ लिखा था. उनके सम्मान में भारत के प्रथम कृत्रिम उपग्रह का नाम आर्यभट रखा गया था.

गणित के जटिल प्रश्नों को सरलता से हल करने के लिए उन्होंने समीकरणों का प्रयोग किया, यह तरीका पूरे विश्व में प्रख्यात हुआ. एक के बाद ग्यारह शून्य जैसी संख्याओं को बोलने के लिए उन्होंने नई पद्धति का आविष्कार किया. बीज गणित में भी उन्होंने कई महत्वपूर्ण संशोधन किए और गणित ज्योतिष का ‘आर्य सिद्धांत’ प्रचलित किया.

उन्होंने त्रिकोण और वृत्त के क्षेत्रफलों की गणना के लिए सूत्र का सुझाव दिया, जो सही साबित हुए. उन्होंने पाई का मान 62832/20000 = 3. 1416 बताया जो बिल्कुल सन्निकट था.

वो पहले गणितज्ञ थे जिन्होंने “ज्या (sine) तालिका”दी, जहाँ प्रत्येक इकाई वृत्तचाप के 225 मिनट्स या 3 डिग्री 45 मिनट्स के अंतराल पर बढ़ती थी. आर्यभट्ट की तालिका के प्रयोग से ज्या 30 (Sine 30) का मान 1719/3438 = 0. 5 प्राप्त होता है, जो एकदम सही मान है. आर्यभट ने वृद्धि संग्रह को परिभाषित करने के लिए वर्णमाला कोड का प्रयोग किया. उनके वर्णमाला कोड को आर्यभट्ट सिफर के रूप में जाना जाता है.

पृथ्वी गोल है और अपनी धुरी पर घूमती है, जिसके कारण रात और दिन होते हैं, यह तथ्य 'निकोलस कॉपरनिकस' के बहुत पहले ही आर्यभट ने बता दिया था. उनका मत है कि चन्द्रमा तथा अन्य ग्रह सूर्य से परावर्तित प्रकाश द्वारा चमकते है.

आर्यभट्ट ने यह बताया कि वर्ष में 366 दिन नहीं वरन 365. 2951 दिन होते हैं. शून्य (0) की महान खोज ने इनका नाम इतिहास में अमर कर दिया. जिसके बिना आजकल गणित की कल्पना करना भी मुश्किल है.

उन्होंने पृथ्वी की परिधि 24835 मील बताई, जो आधुनिक मान 24902 मील के एकदम समीप है. आर्यभट ज्योतिष के क्षेत्र में भी अनेक क्रांतिकारी विचार लाये. आर्यभट के खगोलशास्त्र के सिद्धांतों को सामूहिक रूप से Audayaka System कहते हैं. उनका यह मानना था कि पृथ्वी की कक्षा गोलाकार नहीं, अपितु दीर्घवृत्तीय हैं; उदाहरण के रूप में यदि कोई व्यक्ति किसी नाव या ट्रेन में बैठा हैं और नाव या ट्रेन जब आगे बढती हैं तो उसे वृक्ष, मकान, आदि वस्तुएं पीछे की ओर जाती हुई प्रतीत होती हैं, जबकि ऐसा होता नहीं हैं. इसी तरह गतिमान पृथ्वी पर से स्थिर नक्षत्र भी विपरीत दिशा में जाते दिखाई देते हैं. हमें ऐसा इसलिए प्रतीत होता है क्योंकि पृथ्वी अपने अक्ष पर घुमती हैं और इसकी यह गतिशीलता यह भ्रम उत्पन्न करती है.

आर्यभट के ग्रंथ आर्यभटीय का उपयोग आज भी हिन्दू पंचांग हेतु किया जाता हैं. आर्यभट के महान योगदानों के लिए संसार सदैवउनका ऋणी रहेगा और ऐसे महान विद्वान के भारतीय होने पर हमें गर्व रहेगा.

समय बड़ा बलवान

रचनाकार- दिव्या श्रीवास्तव, बालाघाट, मध्यप्रदेश

समय बड़ा बलवान बच्चो, समय बड़ा बलवान.
रखना इसका ध्यान सदा ही, रखना इसका ध्यान.

वक़्त का पहिया सदा ही चलता, कभी नहीं है ये रुकता.
कर्म हमेशा करते जाओ, व्यर्थ कभी ना समय गंवाओ.
आकाश को एक दिन छू लेता है कर्मवीर इंसान.
समय बड़ा बलवान बच्चो, समय बड़ा बलवान.

एक ध्येय जीवन में साधो, व्यर्थ कभी ना कहीं भी भागो.
करो परिश्रम कठिन हमेशा, देना मन को यही दिलासा.
मेहनत से ही होंगे एक दिन, पूरे सब अरमान.
समय बड़ा बलवान बच्चो, समय बड़ा बलवान.

एक दृष्टि इतिहास पर डालो, पार्थ कहानी ज़रा निहारो.
चिड़िया की आंखों पर जिसका, टिका हुआ था ध्यान.
गुरु की आज्ञा पाकर जिसने, किया लक्ष्य संधान.
समय बड़ा बलवान बच्चो समय बड़ा बलवान.

जंगल

रचनाकार- दिनेश कुमार चन्द्राकर

हरे-भरे पड़े-पौधों से भरे जंगल
रंग-बिरंगी लताओं से घिरे जंगल.

छोटे-बड़े, ऊँचे-ऊँचे पहाड़ों से
कलकल बहते नदी-नालों से
अपने साथ लिये हैं शांति ये जंगल
कारखानों से दूर एकांत ये जंगल.

सभी जीवधारियों का आधार ये जंगल
सृष्टि में पोषक तत्वों का सार ये जंगल.

डाल-डाल पर बन्दर मामा झूलते
पात-पात पर कीट फ़ौज में घूमते.

हाथी दादा होकर मदमस्त चलते
भारी-भरकम काया ले मचलते

शेर जंगल का है राजा इसे सब समझते
ताकतवर हूँ मैं कह अभिमान से गरजते.

मनोहर रूप लिये दिखते हैं चीते
दौड़े सबसे तेज देखो फुर्तीले.

अनुभवी बुद्धिमान हैं भालू नाना
जंगल के मुखिया है यही सयाना.

चतुर लोमड़ी की मत पूछो बात निराली,
खबरीलाल जंगल की यह फिरे मतवाली.

देखों जंगल के अंदर झुमते-नाचते मोर,
कोयल की कर्णप्रिय मधुर रसभरी शोर.

पंछियों की कलरव से सजा संगीत
पवन-पुरवाई बहे गाये राग-गीत.

जंगल के अंदर होता मंगल ही मंगल
प्रेम का संदेश चहुँओर बिखेरता जंगल.

पेड़-पौधों, जीवधारियों को प्रेम से अपनाये
सुख-दुख का इन्हें साथी बना जीवन बिताये.

मत उजाड़ों इसे ये खूबसूरत जंगल की दुनिया
जंगल से ही है शुभ मंगल जन धन-वन देश दुनिया..

जिंदगी में ऐसे पल भी आते है

रचनाकार- अंकुर सिंह, चंदवक, जौनपुर, उत्तर प्रदेश

जिंदगी में ऐसे पल भी आते है,
नाखुश होकर भी खुशी दिखाते है.
ग़म चाहें जितने हो इस दिल में,
दफ़न कर सीने में जीते जाते है..

लाख जिम्मेदारियों का बोझ लादें,
विचलित होते हम डगर में दाएँ-बाएँ.
आने वाले अच्छे कल के चक्कर में,
अपने सगों को बना देते हम पराए..

जिंदगी में भी ऐसा एक पल आएगा,
धन से बढ़, खून का रिश्ता कहलाएगा.
रौब जितना भी झाड़ लो इस तन पर,
अंत समय में मोहन ही बेड़ा पार लगाएगा..

मिला है यारों तुमको श्रेष्ठ मानुष का तन,
प्रभु के भक्ति को कर लो अब चिंतन.
हाय ! हाय ! जितना भी कर लो प्यारे,
साथ तुम्हारे ना जायेगा कागज का ये धन..

जिंदगी में एक पल ऐसा भी आएगा,
बैठ यम के वाहन पर यमलोक तू जाएगा.
आज से ही कर ले अपने कर्मो का हिसाब,
भरी सभा में यम को क्या बतलाएगा..

क्रिसमस गिफ़्ट

रचनाकार- डॉ. मंजरी शुक्ला, पानीपत, हरियाणा

"पापा.... आपको पता है न कि परसों क्रिसमस है. "

पापा ने मुस्कुराते हुए आठ साल के हैरी की तरफ़ देखा जो अपनी भूरी आँखों से उनकी ओर देख रहा था. उसके गोरे चेहरे पर घुँघराले भूरे बाल धूप में सुनहरे लग रहे थे.

उन्होंने उसे प्यार से उठाकर गोद में बिठा लिया.

हैरी लड़ियाते हुए बोला -"इस क्रिसमस पर मुझे सोने की आलमारी चाहिए. "

"सोने की आलमारी!" पापा का मुँह आश्चर्य से खुला रह गया.

"बेटा, ऐसी तो कोई आलमारी होती ही नहीं. "पापा ने प्यार से कहा.

"क्यों नहीं होती? बिलकुल होती है मैंने अभी-अभी किताब में पढ़ा है. "

"ऐसी बात है, जरा मुझे भी वो किताब दिखाओ. "

"अभी लाया. "कहते हुए हैरी अपने कमरें की ओर भागा

थोड़ी ही देर बाद हैरी उनके सामने कहानियों की किताब लिए खड़ा था.

“बेटा ये तो जादुई किस्से कहानियों की किताब है.

“"हाँ. पापा, इसमें एक कहानी है, जिसमें राजा राजकुमार को क्रिसमस पर सोने की आलमारी लाकर देता है. "

"पर बेटा वो तो राजकुमार है न. "

"आप और मम्मी तो कहते हो कि मैं भी आपका राजकुमार हूँ. “हैरी ने कहा.

पापा ने प्यार से हैरी को अपनी गोद में बिठा लिया. वो समझ गए कि अब हैरी को समझाने से कुछ नहीं होगा. उन्होंने सोचा कि थोड़ी देर बाद वो अपने आप ही सोने की आलमारी वाली बात भूल जाएगा. पापा बोले-”चलो हैरी, हम बाज़ार से क्रिसमस ट्री और सजावट का सामान ले आते हैं. "

हैरी खुश हो गया और बोला-"अब मैं बाज़ार में नहीं खोउँगा न. "

"बिलकुल नहीं. “कहते हुए पापा ने उसे प्यार से देखा और दोनों बाजार चल दिए.

बाजार में हैरी कभी ये ले लो तो कभी वो ले लो करता रहा. पापा उसकी हर फ़रमाइश पूरी करते जा रहे थे ताकि वो सोने की आलमारी वाली बात भूल जाए.

क्रिसमस ट्री, लाल कैप, सांता का मुखौटा, चमकीले रंगबिरंगे मोती, बड़ा सा जगमगाता सितारा और बहुत सारी नन्हीं घंटियाँ लेकर दोनों घर आये. "

"मम्मी... कहाँ हो? देखो हम कितना सारा सामान लाए हैं. “हैरी ने दरवाज़े से ही आवाज़ लगाई. मम्मी, हैरी की आवाज़ सुनकर बाहर आईं और उसे खुश देखकर हँसने लगीं.

देर तक हैरी मम्मी को सामान दिखाता रहा, फ़िर अचानक उसे याद आया और वो बोला-"पापा, बस एक ही चीज़ बाकी रह गई. "

""पूरा बाज़ार तो उठा लाए हो, अभी भी कुछ बाकी रह गया है?” मम्मी ने सामान समेटते हुए कहा "हाँ.. तुमने जो कहा वो सब तो हम ले आए हैं.. पापा ने सामान की तरफ़ निगाह डालते हुए कहा.

"सोने की आलमारी पापा.... आप इतनी जल्दी भूल गए?"

पापा का चेहरा उतर गया. उन्होंने मम्मी की तरफ़ देखा जो आश्चर्य से उनका मुँह देख रही थी.

वो नाराज होकर हैरी को डाँटने जा रही थीं कि पापा ने उन्हें रोक दिया. पापा क्रिसमस पर हैरी को उदास नहीं देखना चाहते थे.

"हम कल बाज़ार जाएँगे, तुम्हारे लिए सुनहरी अलमारी ढूँढने. “पापा ने हँसते हुए कहा.

"आप दुनिया के सबसे अच्छे पापा हो. “कहते हुए हैरी उनके ऊपर झूल गया.

हैरी के कमरे से बाहर जाने के बाद मम्मी बोली-"आपने उससे झूठ क्यों कहा?"

मैंने झूठ नहीं कहा, मैं कल सच में वैसी ही अलमारी लाऊँगा. “पापा ने गंभीर स्वर में जवाब दिया.

"तो क्या आप सोने की आलमारी खरीदने की सोच रहे हैं. आप वो किताब वाले राजा नहीं हैं और न ही वो राजकुमार. "

"मैं राजा नहीं हूँ पर हैरी तो मेरा राजकुमार है न?” पापा मुस्कुराते हुए बोले.

"पर आप कहाँ से लाओगे सुनहरी आलमारी.... हमारे पास कहाँ इतने पैसे हैं?आज आपने सारे पैसे खर्च कर दिए. “मम्मी दुखी होते हुए बोलीं

पाप कुछ नहीं बोले और सोने चले गए. "

अगले दिन पापा की नींद बच्चों के शोरगुल और हँसी की आवाज़ से खुली.

उन्होंने बाहर आकर देखा कि हैरी अपने दोस्तों के साथ मिलकर क्रिसमस ट्री सजा रहा था.

रुनझुन करती नन्हीं घंटियाँ, रंगबिरंगे चमकीले कागज़ों में बंद उपहार पूरे कमरे में बिखरे हुए थे.

पापा को देखते ही हैरी आकर पापा के गले लग गया.

पापा ने हैरी को प्यार करते हुए कहा-"अपने दोस्तों को केक खिलाओं, जो हम कल लेकर आए हैं. "

मम्मी भी तब तक केक और बिस्किट की प्लेट्स लेकर आ चुकी थीं.

सभी केक देखकर खुश हो गए. पापा बोले-"हैरी, मैं बाज़ार होकर आता हूँ. “"क्यों पापा, हम तो क्रिसमस की सारी चीज़े ले आए हैं. “हैरी ने कहा

"तुम्हारे लिए सुनहरी आलमारी ढूँढने जा रहा हूँ, जैसे उस राजा ने राजकुमार को दी थी. “पापा ने मुस्कुराते हुए कहा

"नहीं पापा, राजा तो बहुत कंजूस था उसने सिर्फ़ एक अलमारी ही दी थी. आप मेरे लिए इतनी सारी चीज़े लाए हैं कि पूरा कमरा भर गया है. "

पापा ने उसे अपने पास बुलाया और उसकी आँखों में देखा तो हैरी ने नज़रें झुका लीं.

पापा की आँखें भर आईं. उन्होंने हैरी को गले लगा लिया.

हैरी के कहे बिना भी वो समझ गए कि रात को हैरी ने उनकी और मम्मी की बातें सुन ली हैं.

हैरी की आँखों में भी आँसूं थे.

तभी हैरी का दोस्त जॉन आकर बोला-"जल्दो करो हैरी, अभी तो हमारा क्रिसमस ट्री आधा ही सजा है. "

पापा ने हँसते हुए कहा-"मैं भी तुम लोगो के साथ इसे सजाऊँगा. "

मम्मी ये सुनकर बोलीं-"और मुझे क्यों छोड़ दिया?"

मम्मी की बात सुनकर सब हँस पड़े. फिर सबने मिलकर बेहद खूबसरती से क्रिसमस ट्री सजाया.

हैरी के दोस्तों को मम्मी ने टॉफी और चॉकलेट भी दीं. सब बहुत खुश होकर अपने-अपने घर चले गए. "

शाम को पापा, मम्मी और हैरी गिरिजाघर जा रहे थे, तो रास्ते में उन्हें

सान्ता मिला जो ढेर सारे उपहार, टॉफी और चॉकलेट अपने थैले में लिए खड़ा था. उपहारों के लिए बहुत सारे बच्चे उसे घेरे खड़े थे. हैरी भी सांता को देखकर रुक गया.

सांता ने अपनी सफ़ेद दाढ़ी पर हाथ फेरते हुए हैरी से पूछा-"तुम्हें क्रिसमस पर क्या गिफ़्ट चाहिए?"

ये सुनकर हैरी और पापा ने एक दूसरे की ओर देखा और जोरो से हँस पड़े.

चिड़िया आई

रचनाकार- बलदाऊ राम साहू

चिड़िया आई, चिड़िया आई
चीं-चीं, चूँ-चूँ, गीत सुनाई.

अब तक क्यों सोये हो बंधु
प्रातः आकर हमें जगाई.

जल्दी से तुम उठ भी जाओ
क्यों ले रहे हो तुम अंगड़ाई.

सदा प्रेम से रहना दोस्तों
आपस में मत करो लड़ाई.

छोटे -बड़े का भाव मन में
रखें कभी ना भाई - भाई.

मेरा परिवार

रचनाकार- दिलकेश मधुकर 'सूर्य'

मेरा परिवार, छोटा परिवार,
जिसमें रहती, खुशियाँ अपार.

मेरे दादा हैं बड़े जानकार,
सुनाते कहानियाँ हजार.

दादी मेरी बड़ी भोली-भाली,
खीर खिलाती भर- भर थाली.

आई. टी मास्टर पापा मेरे,
कंप्यूटर पर काम से घिरे.

अम्मा मेरी बड़ी गुणवान,
रोज बनाए नए पकवान.

सबकी करते हैं देखभाल,
बन जाते हैं सबकी ढाल.

बहना छोटी, बड़ी सयानी,
नृत्य कला की है दीवानी.

बड़ा होकर कुछ काम करूँगा,
शिक्षक बन नाम करूँगा.

अब स्कूल खुले

रचनाकार- अल्का राठौर

स्कूल की दहलीज भी आवाज दे रही है,
खिड़की, दरवाजे सबका नाम ले रही है.

मैदान बच्चों को खेलने बुला रहा है,
क्लासरूम अ, आ की आवाज़ लगा रहा है.

हैंडपंप बच्चों का इंतज़ार कर रहा है,
घंटी टन-टन बजने को बेचैन हो रही हैं.

स्कूल के पास की बेर अब पकने लगी है,
कच्चे अमरूद की, खुशबु फैलने लगी हैं.

सबको याद आ रहा अपना स्कूल,
चाहे बच्चें हो या शिक्षक,

सब चाहते हैं अब खुले स्कूल.

अम्बे माँ का जगराता

रचनाकार- मौसमी प्रसाद

सरोज हापुड़ के एक सरकारी मकान में अकेली रहती थी. सरोज के पति का स्वर्गवास हो चुका था. वो एक सरकारी पद पर थे. उनका बेटा भी मुजफ्फरनगर में अच्छे सरकारी पद पर कार्यरत है. मोहल्ले में किसी ने कभी उनके बेटे को आते नहीं देखा, और न ही किसी ने सरोज को कभी अपने बेटे के पास जाते हुए देखा.

सरोज को किसी ने कभी परेशान नहीं देखा. उसके चेहरे पर एक मीठी मुस्कान हमेशा रहती है. सरोज अपने आपको हमेशा व्यस्त रखती है. कभी आसपास के दर्जियों से कमीशन पर कपड़े सिलना या छोटे बच्चों को ट्यूशन देना.

सरोज अक्सर कहा करती कि बेटा पैसे भेजता रहता है. लेकिन मैं अपना समय बिताने के लिए कुछ न कुछ करती रहती हूँ.. पति के देहांत के बाद से सरोज की यही दिनचर्या है.

उसे इस बात की खुशी है कि वह रोज अपने बेटे-बहु से फोन पर बात कर लेती है.

आज सरोज के चेहरे पर एक अलग ही खुशी दिख रही है. राजू ने सरोज से उनकी खुशी का कारण पूछ लिया. सवाल सुनकर सरोज ने राजू को अपने पास बिठाया और बताने लगी कि कल रात पोती जया का फोन आया था. उसने बताया है कि पापा नवरात्रि के आखिरी दिन जगराता करवा रहे हैं. पोती ने कहा है कि अम्मा हम आपसे काफी दिनों बाद मिल पाएँगे. आपकी बहुत याद आती है. आप जगराते में आओगी तो मैं आपको वापस नहीं जाने दूँगी. बताते हुए सरोज की आँखों में ऑंसू आ गए.

नवरात्रि के दिन शुरू हुए और आखरी नवरात्र भी आ गया. सरोज को घर पर ही देख राजू ने पूछ लिया. अम्मा क्या हुआ आप तो बेटे के पास जाने वाली थी?

कई साल से अपने मन में दुखों को समेटे हुए, चेहरे पर हमेशा मुस्कान रखने वाली सरोज से रहा नहीं गया. उसकी आंखें छलक आई और वो जोर-जोर से रोने लगी.

राजू समझ नहीं पा रहा था कि क्या हुआ है? सरोज अचानक क्यों रोने लगी?उसने पूछा, अम्मा क्या बात है? बेटा-बहू सब ठीक है न?कुछ अपशकुन तो नहीं हुआ?

सरोज ने आखिर राजू को बताना शुरू किया. बेटा जब से बेटा-बहू और पोता-पोती मुजफ्फरनगर गए हैं. मुझे कोई फोन तक नहीं करता. मैं अपना मान-सम्मान पड़ोस में बनाये रखने के लिए हमेशा झूठ बोलती रहती हूँ. कि मुझे उनका फोन आता है. राजू ने अम्मा से पूछा अम्मा आपको कैसे पता चला कि आपके बेटे के यहाँ जगराता होने वाला है?

सरोज ने कहा- मुजफ्फरनगर में मेरे बेटे के पड़ोस में ही मेरे परिचित रहते हैं. उन्हीं से मुझे बेटे की खबर मिलती रहती है. बेटे ने जगराता करा लिया और अपनी माँ को बुलाया भी नही. मुझे तो इस बात की तसल्ली है कि मेरे बेटा-बहु सब कुशल है. माँ जगदंबे से यही प्रार्थना करती हूँ कि उन्हें हमेशा खुश रखें.

सरोज ने राजू को सब बता तो दिया लेकिन उन्होंने राजू को कसम भी दे दी. कि वह ये बातें किसी को नहीं बतायेगा.

सरोज अब भी पहले की तरह ही हमेशा मुस्कुराती दिखती हैं. लेकिन इस मुस्कुराहट के पीछे छिपे दर्द को राजू साफ पहचान लेता है.

शिक्षा

रचनाकार- नेमेन्द्र कुमार गजेन्द्र

पढ़े लिखे जिनगी गढ़े, जग मा नाम कमाय.
अनपढ़ घूमत गाँव मा, दुख भर भारी पाय..

समय रहत ले ध्यान दौ, पढ़ लेवव सब धीर.
जीवन विद्या पाय के, बन जावव जी वीर..

नेट सेट सब छोड़ के, पुस्तक लेवव हाथ.
पढ़ना अउ बढ़ना हवे, अउ का तुंहर साथ..

घूम घूम काटत समय, बीत जथे चहु मास.
पेपर आवत पास मा, टूटे लगथे आस..

जेन समय कहुँ बीत गे, तेन बाद नइ आय.
फकत फेर रोना पड़े, दोष करम ल लगाय..

इक संदेसा जान के, गाँठ बाँध लव बात.
पढ़े नही जे फेर तो, पड़थे खाना लात..

प्यार लुटाते दीप

रचनाकार- प्रमोद दीक्षित मलय

गली-द्वार मुस्काते दीप,
मन को बहुत सुहाते दीप.
धनी-निर्धन में भेद न कर,
मधुरिम प्यार लुटाते दीप..

कष्टों से जो कभी न हारे,
मिलती विजय सिखाते दीप.
लड़कर सदा अंधकार से,
जल -जल राह दिखाते दीप..

घना कुहरा, गरमी, जाड़ा,
हँस- हँस सह जाते दीप.
महल, कुटीर, खलिहान, खेत.
सभी को मीत बनाते दीप..

चच्चा जी

रचनाकार- बलदाऊ राम साहू

हम सब पर हैं प्यार लुटाते
नटखटिया चच्चा जी.

खेल-खिलौने लेकर आते
गीत मनोहर भी वे गाते
तरह-तरह के करते अभिनय
हँसते भी और खूब हँसाते.

आँखों पर हैं चश्मा पहने
फटफटिया चच्चा जी.

घर पर वे तो कभी न रहते
आड़े-तिरछे कुछ भी कहते
खाने के शौक़ीन बड़े हैं
भूख-प्यास वे कभी न सहते.

रहते हरदम घुड़सवार-से
झटपटिया चच्चा जी.

कहने को हैं पैसे वाले
पर रहते हैं बड़े निराले
मन से सीधे - सच्चे हैं
और हैं वे बड़े दिल वाले.

बिन सोचे सब कुछ कर जाते
हड़बड़िया चच्चा जी.

चक्रवर्ती राजगोपालाचारी

रचनाकार- शेफाली श्रीवास्तव, शिवाजी नगर, भुसावल

राजाजी के नाम से प्रसिद्ध चक्रवर्ती राजगोपालाचारी भारतीय राजनीति के शिखर पुरुष थे. राजगोपालाचारी वकील, लेखक, राजनीतिज्ञ और दार्शनिक थे. वे स्वतन्त्र भारत के द्वितीय गवर्नर-जनरल और प्रथम भारतीय गवर्नर-जनरल थे. अपने अद्भुत और प्रभावशाली व्यक्तित्व के कारण महान् स्वतंत्रता सेनानी, समाज सुधारक, गांधीवादी राजनीतिज्ञ चक्रवर्ती राजगोपालाचारी को आधुनिक भारत के इतिहास का 'चाणक्य' माना जाता है. राजगोपालाचारी की बुद्धि चातुर्य और दृढ़ इच्छाशक्ति के कारण जवाहरलाल नेहरू, महात्मा गाँधी और सरदार पटेल जैसे नेता भी उनके प्रशंसक थे.

चक्रवर्ती राजगोपालाचारी का जन्म 10 दिसंबर, 1878 को तमिलनाडु (तत्कालीन मद्रास) के सेलम ज़िले के होसूर के पास 'धोरापल्ली' नामक गाँव में हुआ था. उनके पिता श्री नलिन चक्रवर्ती सेलम में न्यायाधीश के पद पर कार्यरत थे. गाँव के स्कूल से प्रारंभिक शिक्षा प्राप्त करने के बाद उन्होंने बैंगलोर के सेंट्रल कॉलेज से हाई स्कूल और इंटरमीडिएट की परीक्षाएँ प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की. मद्रास के प्रेसीडेंसी कॉलेज से बी. ए. और वकालत की परीक्षाएँ उत्तीर्ण करने के पश्चात् वे सेलम में ही वकालत करने लगे. देशभक्ति और समाज सेवा की भावना उनमें स्वाभाविक रूप से थी. स्वामी विवेकानंद जी के विचारों से अत्यंत प्रभावित होकर वे

वकालत के साथ साथ समाज सुधार के कार्यों में भी शामिल होने लगे. उन्हें सेलम की म्यूनिसिपल कॉर्पोरेशन का अध्यक्ष चुन लिया गया. इस पद पर रहते हुए उन्होंने अनेक नागरिक समस्याओं का तो समाधान किया ही, साथ ही सामाजिक बुराइयों का भी विरोध किया. सेलम में पहले सहकारी बैंक की स्थापना का श्रेय उन्हें ही दिया जाता है.

गांधीजी के असहयोग आंदोलन से प्रभावित होकर वे अपनी वकालत छोड़कर राजनीति में पूरी तरह सक्रिय हो गए. गाँधीजी के छुआछूत विरोधी आंदोलन और हिंदू-मुस्लिम एकता के कार्यक्रमों ने उन्हें प्रभावित किया. 1937 में काउंसिल के चुनावों में कांग्रेस की जीत के बाद राजाजी मद्रास के प्रधानमंत्री (तब मुख्यमंत्री के समकक्ष पद) बने और 1939 में जब वायसराय ने एक तरफ़ा निर्णय लेकर भारत को द्वितीय विश्वयुद्ध में धकेल दिया तो उन्होंने विरोध स्वरूप इस्तीफ़ा दे दिया.

राजाजी गाँधीजी के अनुयायी थे, लेकिन 1939 में जब द्वितीय विश्वयुद्ध शुरू हुआ, तब वे गाँधीजी के विरोध में खड़े हो गए. ब्रिटिश सरकार इस युद्ध में भारत की मदद चाहती थी. गाँधीजी का विचार था कि युद्ध में ब्रिटिश सरकार को नैतिक आधार पर समर्थन दिया जाए. पर राजाजी का मानना था कि ब्रिटिश सरकार से युद्ध के बाद भारत की आजादी की पूरी गारंटी लेनी चाहिए. और सरकार को युद्ध में पूरा समर्थन देना चाहिए. गाँधीजी ने उनकी बात नहीं मानी इस वजह से राजाजी ने कांग्रेस की कार्यकारिणी से इस्तीफ़ा दे दिया और अपने सिद्धांतों पर टिके रहे.

साल 1942 में जब गाँधीजी ने 'भारत छोड़ो आंदोलन' शुरू किया, तब भी राजाजी उनके साथ नहीं आए. इसी दौरान भारत विभाजन के सुर भी तेज हो गए थे. उन्होंने तभी ताड़ लिया था कि देश का विभाजन होकर रहेगा और इस बारे में बोलते भी थे. लोग तब उनकी आलोचना करते थे पर आखिरकार राजाजी की बात सच हुई.

क्या वे पहले राष्ट्रपति होते?

राजाजी, जवाहर लाल नेहरू के सबसे अच्छे दोस्तों में से थे पर, वैचारिक मतभेद के चलते वे उनसे अलग हो गए. बहुत कम लोग जानते हैं कि नेहरू उन्हें देश का पहला राष्ट्रपति बनाना चाहते थे पर कांग्रेस में बहुमत राजेंद्र प्रसाद के पक्ष में था. आख़िरी ब्रिटिश वायसराय के जाने के बाद राजाजी को देश का गवर्नर जनरल बनाया गया.

जवाहरलाल नेहरू के नेतृत्व में 1946 मे बनी सरकार में राजगोपालाचारी को उद्योग मंत्री बनाया गया. सरदार वल्लभभाई पटेल के देहांत के बाद उन्हे देश के गृहमंत्री का दायित्व सौंपा गया. साल 1954 में उन्हें देश का सर्वोच्च नागरिक सम्मान भारत रत्न दिया गया.

1957 में दूसरे आम चुनाव में कांग्रेस को ज़बर्दस्त सफलता मिली. राजाजी ने इस पर अपनी चिंता ज़ाहिर की. उन्होंने कहा कि लोकतंत्र की सफलता के लिए मज़बूत विपक्ष का होना नितांत आवश्यक है. उनका कहना था कि बिना विपक्ष के सरकार ऐसी है मानो गधे की पीठ पर एक तरफ़ ही बोझ रख दिया गया है. मज़बूत विपक्ष लोकतंत्र के भार को बराबर रखता है. राजाजी का मानना था कि किसी पार्टी में भी दो विचारधाराएँ होनी चाहिए ऐसा न होने की स्थिति में पार्टी का मुखिया एक तानाशाह की भाँति बर्ताव करने लगता है.

अपने इन्ही विचारों को कार्यरूप में परिणत करने के लिए सी राजगोपालाचारी ने मीनू मसानी, कन्हैयालाल माणिकलाल मुंशी और एन जी रंगा के साथ मिलकर स्वतंत्र पार्टी की स्थापना की. स्वतंत्र पार्टी देश के राजनीतिक पटल पर एक ऐसी उदारवादी राजनीतिक पार्टी के रूप में उभरी जिसने न केवल नेहरू के समाजवाद का पुरजोर विरोध किया वरन समाजवाद के नाम पर चल रहे परमिट कोटा राज को खत्म कर मुक्त अर्थव्यवस्था को लागू करने की वकालत की. स्वतंत्र पार्टी ने 1962 और 1967 के आम चुनावों में उल्लेखनीय प्रदर्शन किया परंतु बदलते राजनीतिक समीकरणों के बीच 1972 के चुनावों में असफल होने के बाद इस पार्टी का अस्तित्व लगभग समाप्त हो गया लेकिन एक विचारधारा के रूप में स्वतंत्र पार्टी की नीतियों का महत्व इस बात से समझा जा सकता है कि 1991 में पी वी नरसिंहराव की सरकार की आर्थिक नीतियाँ स्वतंत्र पार्टी से प्रभावित थीं.

तमिल और अंग्रेजी के बहुत अच्छे लेखक राजाजी ने 'गीता' और 'उपनिषदों' की टीका लिखीं. अपनी किताब 'चक्रवर्ती थिरुमगम' के लिए उन्हें साहित्य अकादमी पुरस्कार मिला. राजगोपालाचारी बेहतरीन कहानियाँ भी लिखते थे.

25 दिसंबर 1972 को चक्रवर्ती राजगोपालाचारी की मृत्यु हो गई.

कलम

रचनाकार- नेमेन्द्र कुमार गजेन्द्र

तेज कलम मा लागे, राहय धार.
जउन गुलामी नइया, करगे पार..

आजादी बर बनके, इक तलवार.
मौन कलम तक भरगे, बड़ हुंकार..

कलम धरम ला मानत, लिखगे सार.
भगत बोस के गाथा, कर स्वीकार..

झाँसी दुर्गा के वो, जौहर देख.
कलम लहू मा बुड़के, लिखगे लेख..

वीर लहू के होगे, अमर ह नाम.
रखे कलम हे लेखा, मानत काम..

मान कलम ला मनले, सब जन देव.
आजादी बर रचगे, जे हर नेव..

पढ़ई तुँहर द्वार

रचनाकार- स्नेहलता टोप्पो

गली मोहल्ला पारा- पारा,
जगमग आस का दीप जले,
ज्ञान भास्कर चमके नभ में,
शिक्षा फिर से फूले-फले.

बुलटू के बोल कहीं पर,
कहीं गूंज है माइक की,
कहीं वर्चुअल क्लास सुसज्जित
गूँज गुरूजी बाइक की,

मिस कॉल करके यह लगता,
जैसे गुरू हों पास खड़े,
ज्ञान भास्कर चमके नभ में,
शिक्षा फिर से फूले-फले.

कोरोना का भीषण संकट है,
विकट स्थिति आयी है,
वैकल्पिक शिक्षा से भरेगी,
अशिक्षा की खाई है,

लक्ष्य मिलेगा शनैः-शनैः चल,
नव प्रभात विश्वास कहे,
ज्ञान भास्कर चमके नभ में,
शिक्षा फिर से फूले-फले.

विपदा चाहे जैसे भी हो,
हार नहीं हम मानेंगे,
नव नीति की नींव बनेंगे,
वक्त नहीं जाने देंगे,

ज्ञान नीर से सींच बाल मन,
पुलकित बाग सुवास बहे,
ज्ञान भास्कर चमके नभ में
शिक्षा फिर से फूले-फले.

सैनेटाइज़ कर हाथों को,
दूरी रखकर बैठो पढ़ो,
नाक, मुँह को ढको मास्क से,
प्यारे बच्चों धीर धरो,

आलोकित शाला फिर होंगी,
सेहत प्रथम विभास रहे,
ज्ञान भास्कर चमके नभ में,
शिक्षा फिर से फूले-फले.

पंचतंत्र की कथाएँ- धूर्तों की संगत

किसी वन में मदोत्कट नामक सिंह रहता था. वह बड़ा बलवान था. अनुचर के रूप में एक बाघ, एक सियार और एक कौआ सदा उसके साथ ही रहते थे. ये तीनों बड़े ही धूर्त थे. मदोत्कट जब भी किसी प्राणी का शिकार करता तो उसके खा लेने के बाद ये तीनों बचे हुए माँस को छककर खाते. बिना किसी परिश्रम के इन्हें सभी प्रकार के पशुओं का माँस भरपेट मिल जाता था. बड़े आनंद से इनका जीवन व्यतीत हो रहा था.

एक बार कहीं से एक ऊँट भटकता हुआ उस वन में आ गया. जब इन तीनों ने ऊँट को देखा तो इन्हें बड़ा आश्चर्य और भय हुआ. ऐसा विचित्र प्राणी उन्होंने पहले कभी नहीं देखा था. उन्हें लगा कि अवश्य ही यह बड़ा शक्तिशाली प्राणी होगा. मदोत्कट ने अपने अनुचरों से कहा, जाकर पता लगाओ, वह कौन है और इस वन में क्यों आया है?

ये तीनों ऊँट के पास पहुंचे और उसके साथ संवाद किया. उससे जुड़ी सारी सूचनाएँ एकत्रित कर वापस आए और मदोत्कट को बताया कि महाराज! यह ऊँट नाम का प्राणी है. उसका नाम कथनक है. वह मरुस्थल में रहता है. फूल-पत्तियाँ उसका भोजन हैं. वह अपने समूह से बिछड़ गया है और भटककर इस जंगल में आ गया है. मदोत्कट ने सोचा, इस विशाल और शक्तिशाली जीव से मित्रता कर लेनी चाहिए. उसने अपने इन अनुचरों से कहा कि वह हमारा अतिथि है हमें उसे अपने साथ रखना चाहिए. जाओ और उसे मेरी मित्रता का संदेश देकर मेरे पास ले आओ. वे तीनों फिर कथनक ऊँट के पास गए और आदर सहित उसे मदोत्कट के पास ले आए.

मदोत्कट ने कथनक से कहा, आप जब तक चाहें इस वन में निर्भय होकर आनंदपूर्वक रहिए. कथनक उस हरे-भरे वन में निश्चिन्त भाव से रहने लगा. धीरे-धीरे वह बहुत हृष्ट-पुष्ट हो गया. बाघ और सियार जब भी कथनक को देखते उनके मुँह में पानी आ जाता. पर सिंह से भय के कारण वे मन मसोसकर रह जाते.

एक बार वन में मदोत्कट और गजराज का आमना-सामना हो गया. मदोत्कट को अपने शक्तिशाली पंजों और तेज जबड़ों पर बहुत घमंड था. वह बिना आगा-पीछा सोचे गजराज से भिड़ गया. बड़ा भयंकर युद्ध हुआ. गजराज ने अपने विशाल दाँतों से मदोत्कट की दुर्दशा कर दी. गजराज ने सूँड़ और पैरों से मार-मार कर मदोत्कट को अधमरा कर दिया. उसके प्राण तो बच गए पर वह बुरी तरह घायल होकर चलने-फिरने के योग्य भी नहीं रहा. कोई साथी इस लड़ाई में मदोत्कट की कोई सहायता न कर सका.

घायल मदोत्कट अब अपने भोजन के लिए किसी प्राणी का शिकार करने की स्थिति में नहीं रहा. उसके तीनों अनुचर बाघ, सियार, कौआ भी भोजन न जुटा सके. यह उन्होंने सीखा ही नहीं था. अब चारों की स्थिति भूख के कारण दयनीय होती जा रही थी.

एक दिन जब कथनक कहीं दूर पेड़ों की पत्तियाँ खा रहा था तब सियार ने सिंह से निवेदन किया कि महाराज! यदि ऐसा ही चलता रहा तो शीघ्र ही भूख से हमारी मृत्यु हो जाएगी. आपकी आज्ञा हो तो कथनक को मार कर हम सब अपनी भूख शांत कर सकते हैं.

मदोत्कट ने गुर्राकर कहा, सावधान मूर्ख! जो प्राणी हमारी शरण में आया है वह शत्रु भी हो तो उसकी रक्षा करना हमारा धर्म है. फिर कभी ऐसी बात न करना. सियार यह सुन कर चुप हो गया. किसी और को कुछ बोलने का साहस नहीं हुआ. सिंह ने तीनों को डाँटते हुए कहा. तुम तीनों सदा मेरे छोड़े हुए भोजन पर आश्रित थे. आज जब मैं अशक्त हो गया हूँ तो मेरे लिए भोजन जुटाना तुम सबका दायित्व है. जाओ और मेरे लिए भोजन लेकर आओ.

तीनों धूर्त तो थे ही, आलसी भी थे. भोजन जुटाने के लिए परिश्रम करना उनके स्वभाव में ही नहीं था. तीनों ने आपस में विचार-विमर्श किया और कथनक के विरुद्ध एक षड्यंत्र रच डाला.

एक दिन वे सभी सिंह के आसपास बैठे हुए थे. तभी योजना के अनुसार कौआ धीरे-धीरे चलकर सिंह के सामने पहुँचा और बड़े कातर स्वर में बोला, महाराज! मुझसे आप की यह दशा देखी नहीं जाती. मेरा यह शरीर आपके छोड़े हुए भोजन पर ही पलता रहा है. अच्छा होगा, आज मुझे आप भोजन के रुप में ग्रहण कर लें. मेरे हृदय को थोड़ी सांत्वना मिल जाएगी. अपने स्वामी के थोड़े काम तो आऊँगा.

कौए की बात सुनकर सियार उठा और आवेश भरे स्वर में कौए को डाँटते हुए कहा, चल हट, बड़ी स्वामीभक्ति दिखा रहा है. अरे!! तेरे शरीर में तो पंख ही पंख हैं. तुझे खाकर क्या महाराज की भूख मिटेगी?

फिर वह सिंह के सामने खड़ा होकर बोला, महाराज! आप मुझे खाकर मुझ पर उपकार कीजिए.

अब योजना के अनुसार बाघ की बारी थी. वह उठा और सियार को पीछे धकेलते हुए बोला, अरे मूर्ख!!दूर हट, तेरे शरीर में तो बाल ही बाल हैं. तुझे खाकर क्या मिलेगा?

अब बाघ ने सिंह से कहा, हे वनराज! आप मुझे अपना आहार बनाइए. जीवन भर मैंने आपका दिया हुआ ही खाया है. आज ऋण चुकाने का अवसर है. यह अवसर मुझे दीजिए.

तीनों धूर्तों द्वारा छलपूर्वक रचे गए इस दृश्य को भोला-भाला कथनक सच समझ बैठा. उसे लगा यदि वह अपने आप को प्रस्तुत नहीं करता तो यह उसकी कृतघ्नता होगी. वह उठा और बोला, महाराज! मैं भी आपका बहुत कृतज्ञ हूँ. मुझे आपने अभयदान दिया जिससे मैं इस वन में सुखपूर्वक रह सका. यदि आज मेरे होते आपके प्राणों पर संकट आता है तो मेरे होने का अर्थ ही क्या है. आप मुझे खा लीजिए. कथनक के इतना कहते ही बाघ और सियार उस पर टूट पड़े. पल भर में ही कथनक के प्राण निकल गए. वह यह समझ न सका कि छली और धूर्त साथियों से सावधान रहना चाहिए और विवेकहीन स्वामी पर विश्वास भी नहीं करना चाहिए.

चूहा

रचनाकार- रजनी शर्मा बस्तरिया

खामोशी से राह बना कर,
मीलों का सफर तय कर लेते हो.
भूपथगामनी से द्रुत गति तुम्हारी,
क्षण में सारी सृष्टि नाप लेते हो.
कंकरा आंखें और दूरदृष्टि,
लक्ष्य अपना साध लेते हो.
श्रम के सुवास माटी के ढेर पर,
पहाड़ों का गुरूर क्षण में तोड़ देते हो.
चूहा क्यों है विशेष, विशिष्ट,
कार्यों से अपने सबको बता ही देते हो..

प्यारा बचपन

रचनाकार- रेणुका सिंह

खो ना जाए जरा सँभालो
मासूम-सा भोला-भाला,
प्यारा बचपन.

निश्छल होंठों की मुस्कान
पंछियों-सी उड़ान
खो ना जाए जरा सँभालो.

मन में उठते अनगिनत सवाल
क्या है, क्यों है? ये जिज्ञासाएँ
खो ना जाये जरा सँभालो.

सभी मेरे हैं, मैं सबका हूँ
कोई नहीं पराया यह भावना
मिट ना जाए जरा सँभालो.

मीठे सपनों को बुनने दो
ख्वाबों सा ऊँचा उड़ने दो
कल्पनाओं की ये लहर,
छूट ना जाए जरा सँभालो.

बिना नाम की नदी

रचनाकार- शालिनी पंकज दुबे

नदी शब्द सुनते ही सहसा बचपन की याद आ जाती है. हम जब भी किसी समारोह में या रिश्तेदारी में गाँव जाते थे तो नदी घूमने जरूर जाते थे. कई गाँवो के नाम तो याद हैं पर नदी के नाम याद नहीं. जेहन को टटोलने पर घाट का नाम याद आता है, पर नदी का नाम नही. कुछ प्रसिद्ध नदियों के नाम पता हैं पर छोटी, संकरी, इस पार से उस पार तक दिखने वाली नदी का नही.. . बचपन जिसकी आगोश में बीता जो हमारा, उस जमाने का स्वीमिंग पूल हुआ करती थी, उस नदी का नाम तक याद नहीं.

पीपल की वो डाल जिसका एक सिरा आसमान छूने की फिराक में रहता और दूसरी वो जो नदी को छूते हुए अठखेलियाँ करती. उस डाल पर लटक कर खेलना एक अलग ही एहसास था. दौड़कर नदी में छलाँग लगाना, जैसे माँ की गोद में छोटा नटखट बच्चा कूद पड़ता है. गर्मी में घण्टों तक नहाना. सब याद है पर कभी सूझा ही नही कि इस नदी को कोई नाम दें, कोई अपना सा, प्यारा सा नाम.

जाने क्यों घाट के नाम में ही हमने नदी के अस्तित्व को स्वीकार किया, जबकि घाट ने नदी तक पहुँचने की कभी सुगम राह भी नही दी.

बड़ी विडम्बना है कि हमारे बचपन की माँ स्वरूपा इस नदी के लिए हमने कुछ किया ही नही, न कुछ करने की सोच रखी. प्रेम में नाम गौण हो जाता है. नदी बेनाम होने से व्याकुल नहीं है. उसकी निगाहें तो आज भी पथ की ओर देखती हैं कि कोई बच्चा, अतीत का ही सही, फिर उसकी गोद में आ बैठे. पर आत्मीयता से हम कभी करीब भी न बैठे. शहरों की रौनक से लौटकर जब गाँव की गलियों में घूमने निकले, तो सब अच्छा लगा. गाँव की मिट्टी, हरियाली, बाग-बगीचे, खेत- खलिहान. नदी ने अपने आँचल में खेलने वाले बच्चों को न देखा तो स्वयं ही सूखने लगी. जलकुम्भी, कीचड़ सबने अपनी जगह बना ली. नदी निष्प्राण होने लगी.

अंतर्मन में दीप जला लें

रचनाकार- प्रमोद दीक्षित मलय

बाहर दीप जलाने से पहले,
अंतर्मन में इक दीप जला लें.
नेह सुधा-जल से अभिसिंचित कर,
बंजर मन में रस, प्रीति उगा लें.

अविवेक अंधेरे को अब त्यागें.
जोड़ें जीवन के बिखरे धागे.
सुख-शांति है आधार विकास का,
तटिनी-तरू तट मत काट अभागे.
हृदयांगन की हम करें सफाई,
सत्कर्मों को मनमीत बना ले..

सब अपने ही हैं नहीं पराये.
मिलजुल गायें, खुशी मनायें.
धरती पर न रहे कहीं अंधेरा,
प्रेम, मधुरता, सद्भाव बनायें.
अब हार-जीत से ऊपर उठकर,
सामंजस्य के नव गीत बना लें..

बिल्ली गयी दिल्ली

रचनाकार- टीकेश्वर सिन्हा "गब्दीवाला"

कल बिल्ली गयी दिल्ली,
और दिल्ली से कलकत्ता.
वहाँ पहुँचते ही उसने,
पूछा कुत्ते से पता.
फिर कुत्ते ने बताया,
उसे पता अजमेर का.
अजमेर जाते ही उसने,
नाम सुना शेर का.
फिर बिल्ली की हुई,
सब सिट्टी-पिट्टी गुम.
न कुछ सुनी न समझी,
दबाकर भाग चली दुम.

धनतेरस

रचनाकार- प्रिया देवांगन "प्रियू"

देते हैं उपहार जी, मिलकर सबको आज.
धनतेरस के पर्व में, पूरे करते काज..
पूरे करते काज, घरो में दीप जलाते.
आती खुशियाँ रोज, सभी पकवाने खाते..
करे साज श्रृँगार, नये कपड़े हैं लेते.
करते आतिशबाज, बधाई सबको देते..

करते पूजा पाठ जी, मिलकर के परिवार.
हाथ जोड़ विनती करे, आये खुशी अपार..
आये खुशी अपार, चरण में शीश झुकाते.
दीप जलाते रोज, मातुकी मूरत लाते..
करे आरती लोग, दिलों में खुशियाँ भरते.
आती लक्ष्मी द्वार, सभी पूजा है करते..

हमारे प्रेरणास्रोत- पंडित मदन मोहन मालवीय

हेलो बच्चो,

आज हम उस समय की बात कर रहे हैं जब भारत में ब्रिटिश राज था. लोगों में तब इस बात का डर था कि युवा पीढ़ी अंग्रेजों के प्रभाव में पाश्चात्य संस्कृति को अपनाकर अपनी धर्म संस्कृति और नैतिक मूल्य न खो दे. आज मैं एक ऐसे महान व्यक्तित्व का जिक्र करूँगी जिनका मानना था कि शिक्षा के माध्यम से हम अपने देश की संस्कृति व सभ्यता को बचा सकते हैं.

बच्चो हम बात कर रहे है पंडित मदन मोहन मालवीय की, जिन्हें 'महामना' कहा जाता था. उनका जन्म २५ दिसम्बर १८६१ को इलाहाबाद में हुआ. प्रारम्भिक शिक्षा के बाद उन्होंने सन १८७९ में इलाहाबाद से मैट्रिक की पढ़ाई पूरी की. इसके बाद कलकत्ता विश्वविद्यालय से बी॰ए॰ की पढ़ाई पूर्ण कर, ४० रुपए मासिक वेतन पर इलाहाबाद ज़िले में शिक्षक बन गए. एक शिक्षक के रूप में उन्हें लगता था कि शिक्षा का व्यापक प्रसार ही देश को उन्नति के पथ पर लाएगा. उन्होंने एक ऐसा शिक्षा संस्थान बनाने का प्रण लिया जहाँ भारतीय संस्कृति को क़ायम रखते हुए देश दुनिया में हो रही तकनीकी प्रगति की भी शिक्षा दी जाए. इस सपने को साकार करने के लिए उन्होंने देश के धनाढ्य लोगों से सहयोग माँगा. मालवीय जी ने अपनी मेहनत और लगन से काशी हिंदू विश्वविद्यालय की स्थापना कर देश को शिक्षा के क्षेत्र में एक अनमोल तोहफ़ा दिया.

वाराणसी में स्थित काशी विश्वविद्यालय लगभग तेरह सौ एकड़ मे बसा है. स्त्रियों की शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए मालवीय जी ने वुमेंस क़ोलेज की स्थापना की. मालवीय जी ने विश्वविद्यालय के पाठ्यक्रम में हिंदी, संस्कृत, नैतिक मूल्यों और अनुशासन पर ज़ोर दिया. विश्वविद्यालय में अनुशासन इतना था कि यदि कोई भी छात्र उद्दंडता करता तो उसे आर्थिक दण्ड देना पड़ता था. मगर जब छात्र आर्थिक दण्ड को माफ़ कराने उनके पास आते तो मालवीय जी उन्हें माफ़ भी कर देते. यह बात शिक्षकों को अच्छी नहीं लगती थी. उन्होंने जब महामना से इसका कारण पूछा तो वे बोले "एक बार स्कूल मे गंदे कपड़े पहनने पर मेरे शिक्षक ने मुझ पर छः पैसे का अर्थ दण्ड लगाया था, जबकि उन दिनो मुझ जैसे साधारण परिवार के बच्चों के पास दो पैसे भी कपड़े धोने वाले साबुन के लिए नही होते थे. उस घटना को याद करते हुए मेरे हाथ स्वतः ही उन छात्रों के प्रार्थना पत्र पर क्षमा लिख देते हैं. "अपने ऐसे सरल स्वभाव के कारण शिक्षकों और छात्रों के बीच वे अत्यंत लोकप्रिय थे.

एक बार मालवीय जी के द्वारा कलकत्ता में भारतीय राष्ट्रीय कोंग्रेस के अधिवेशन में दिए ओजपूर्ण भाषण से महाराजा श्रीरामपाल सिंह जी इतने प्रभावित हुए कि उन्होंने मालवीय जी को साप्ताहिक समाचार पत्र हिंदुस्तान का सम्पादक नियुक्त कर दिया. मालवीय जी दो बार, वर्ष १९०९ और १९१८ में, कोंग्रेस के अध्यक्ष चुने गए. राजनीति में रहते हुए उन्होंने ब्रिटिश सरकार की निर्भीकतापूर्वक आलोचना की और पंजाब की दमन नीति की भी आलोचना की. उन्होंने स्वतंत्रता आंदोलन मे भाग लेकर ३५ साल तक कोंग्रेस की सेवा की.

मालवीय जी ने वर्ष १९१० मे वाराणसी मे हिंदी साहित्य सम्मेलन की स्थापना की. इस सम्मेंलन में उन्होंने राष्ट्र भाषा के रूप मे हिंदी का प्रयोग, स्टैम्प पर हिंदी का प्रयोग, अदालतों मे देवनागरी लिपि का प्रचार आदि प्रस्ताव पारित किए. साथ ही सार्वजनिक रूप से हिंदी आंदोलन का नेतृत्व कर उन्होंने हिंदी भाषा को सरकारी दफ़्तरों मे अनिवार्य कर दिया. इसी तरह हिंदी को यश, विस्तार और प्रतिष्ठा मिली. पंडित मदन मोहन मालवीय उच्च कोटि के विद्वान, वक्ता और लेखक तो थे ही, उनकी सहृदयता और सरल स्वभाव ने आज उन्हें हमारा प्रेरणास्रोत बना दिया.

सच की राह

रचनाकार- लाल देवेन्द्र कुमार श्रीवास्तव

बहुत कठिन होता है जीवन में,
सच्चाई के राह पर हमें चलना.
उससे ज़्यादा मुश्किल है होता,
बुरी आदतों को हमें बदलना..

बुराई के दल-दल में फंस जाते,
मुश्किल होता है तब हमें संभलना.
सर्वत्र अराजकता व हिंसा फैली,
घर से नहीं चाहिए हमें निकलना..

सच के निर्णय लेने से जीवन में,
ख़ुशियों के फूल सदैव है खिलता.
झूठ के बल पर जब हम चलते,
तो जीवन में दुःख है मिलता..

झूठ, फ़रेब व कपट से जीवन,
ज़्यादा दिन नहीं हमारा चलता.
हिम्मत से सच राह पर चल दें,
निश्चय ही यूँ जीवन निखरता..

धन-दौलत और दिखावा से,
अधिक समय नहीं चमकना.
सत्पथ, सद्कर्म और प्रीत से,
जीवन में है कीर्ति फहरना..

सुनने पर यूँ विश्वास न करना,
अपनों के नज़रों में न गिरना.
सबसे मुश्किल सच का निर्णय,
दृढ़ हो तो संभव कर गुजरना..

प्रतिमा और प्रति- माँ

रचनाकार- प्रिया देवांगन "प्रियू"

नवरात्रि लगते ही सब भक्त माँ अम्बे के प्रतिमा का नव रूपो का अलग अलग दिन विधि विधान से अपने सामर्थ्य के अनुसार पूजा पाठ और माँ को मिठाई, फल का भोग लगाते हैं.

पर उस प्रति माँ का क्या ? जो आज अपने ही घर में बेबस और लाचार पड़ी है. आज भी कई माँ वृद्धाश्रम में है. जो आज भी अपने बहू -बेटो अपने पोता -पोती का राह ताक रही है और इस आस में बैठी है की मेरा बेटा मुझे लेने आयेगा. नवरात्री में जितनी सेवा, पूजा माँ के प्रतिमा का करते है, अगर उसका आधा सेवा भी अपने माँ के लिये करते, तो आज घर एक मंदिर बन जाता.

माँ अम्बे की प्रतिमा में माँ अम्बे विराजती है लेकिन दुनिया के प्रति माँ में पूरा ब्रम्हाण्ड विराज मान है.

सिर्फ मंदिर जा कर दान - दक्षिणा देने से ही माँ अम्बे खुश नहीं रहती है. अगर माता रानी को खुश करना चाहते हो तो सबसे पहले अपनी माँ को खुश रखना सीखो. अगर आप घर की माँ को खुश रखोगे तभी मंदिर की माँ खुश होगी. और अपना आशीर्वाद देगी.

माँ अम्बे यह नही चाहती कि भक्त नव दिन तक मेरे द्वार आये. नारियल, फल और मेवा चढ़ाये. माँ फल और मेवा की भूखी नही होती है. माँ तो केवल सच्ची सेवा, सच्ची भक्ति चाहती है. अगर आज सब मिलकर अपनी - अपनी माँ को खुश करते, माँ की सेवा करते तो आज शायद पृथ्वी पर यह संकट नही आता.

आज इस जगत में कितनी सारी माँ वृद्धाश्रम में रहती है. रोते बिलखते अपने बेटे - बेटियों को याद करती है. उस माँ को कभी ना तड़पाओ जो माँ आपका पालन पोषण की है. आपको आपने हाथों से भोजन खिलाई है. माँ को भी अपने बेटो से यही आशा रहती है कि जब हम बूढ़े हो जाएंगे तो ऐसे ही हमारे बच्चे हमारी सेवा करेंगे. माँ तो माँ होती है. अपने बच्चे के बारे में कभी गलत नही सोंच सकती है. लेकिन आज माँ को क्या पता कि माँ - बाप बूढ़े होते ही बोझ हो जाएंगे.

आज माँ को क्या पता कि जब हम बूढ़े हो जाएंगे तो हमारे बेटे - बहू हमें वृद्धाश्रम में छोड़ आएंगे.

अरे मानव कुछ तो समझो, कुछ तो दया दिखाओ अपने माँ - बाप के ऊपर जिस माँ ने तुम्हे ऊँगली पकड़ के चलना सिखाया आज उसी माँ को तुम बेसहारा बना दिये. बहुत खुश नसीब वाले होते हैं वो इंसान जिसके माँ - बाप उनके साथ हमेशा रहते हैं. अनाथ आश्रम के बच्चे अपने माता - पिता को देखने के लिए तड़पते है और एक तरफ ये इंसान हैं जो माँ - बाप होते हुए भी उन्हें छोड़ आते है. माता - पिता की कीमत उस गरीब अनाथ बच्चों से पूछो की माता - पिता क्या होते हैं.

बड़ा - बड़ा घर, गाड़ी, बंगला और पैसे रखने वाले ही अमीर नही होते. जिस घर में बूढ़े माँ - बाप की सेवा होती है वही इंसान दुनिया की सबसे अमीर इंसान होते हैं.

अगर सेवा करना चाहते हो तो अपने माता - पिता की करो, मंदिर जा कर दिखावा करने से माँ नही आएगी. आज अगर संसार मे माता - पिता को बोझ नही समझते, माँ अम्बे की तरह उनकी पूजा सेवा करते तो कही भी वृद्धाश्रमों की जरूरत नही पड़ती.

आज आप ऐसा करोगे तो कल आपके बच्चे भी आपके साथ ऐसा ही व्यवहार करेंगे तब आप उस पर ऊँगली नही उठा पाओगे.

आने वाले कल के बारे में सोचो जैसा व्यवहार आप अपने माता - पिता के साथ करोगे वैसा ही व्यवहार कल आपके बच्चे आपके साथ करेंगे.

अगर प्रतिमा को खुश रखना है तो अपने प्रति माँ को पहले खुश करो. अच्छे से भोजन खिलाओ, माँ की सेवा करो. तभी मंदिर वाली माँ अम्बे आपके घर बिना बुलाये आएगी और अपना आशीर्वाद देगी.

मेरा देश संवर रहा है

रचनाकार- लाल देवेन्द्र कुमार श्रीवास्तव

देश मेरा अब संवर रहा है,
देश मेरा अब बदल रहा है.
नवक्रांति के नव-जागरण से
देश हमारा निखर रहा है..

हो रहा अब बहु परिवर्तन,
हर क्षेत्र में हो रहा सृजन.
संचार हुआ नव-चेतन का,
ख़ूब हो रहा चिंतन-मनन..

प्राचीन विडंबना है ध्वस्त,
प्रगति से लोग अब मस्त.
विषता कटुता न दिखती,
सूर्य अब न हो रहा अस्त..

चहुँओर दिखती ख़ुशहाली,
देश में अब न है बदहाली.
पहुँचे हम मंगल ग्रह पर भी,
अब भारत की बात निराली..

विश्व में हम बने हैं सिरमौर,
उन्नति का अब दिखता दौर.
शान से हम सर्वत्र गरजते,
निर्धनता का न देश में ठौर..

विज्ञान व शिक्षा में पहचान,
करते लेते वो जो लेते हम ठान.
दुनिया में बज रहा भारत का डंका,
मेरे राष्ट्र का होता सम्मान..

धान के रुनझुन मोला संगीत लागे जी

रचनाकार- स्नेहलता "स्नेह"

हमर भाखा हमर बोली हमन ला मीत लागे जी
पपीहा कोयली मैना के गुरतुर गीत लागे जी

हमन छत्तिसगढ़ी मनखे हमर दिल पुन्नी के चंदा
हमर दिल के अंजोरी मा अमावस दीत लागे जी

इहां चाँउर के आटा से बनाथे अंगाकर रोटी
पताल लसुन मिरच चटनी झमाझम तीत लागे जी

देवारी मा फरा खुर्मी सुहारी ठेठरी बनथे
छुही माटी लिपे अँगना सुघ्घर ए रीत लागे जी

चंदैनी गोंदा ममहाथे खिले मंदार अउ चंपा
गहूँ तिल धान के रुनझुन मोला संगीत लागे जी

नवाचार- मृणशिल्प से कला कौशल का विकास

रचनाकार- स्नेहलता "स्नेह"

माटी का ये शिल्प है, शिल्प अनोखा जान.
टेराकोटा आर्ट है, भारत की पहचान..

मिट्टी से बनाए गए बर्तनों अथवा मूर्तियों को जब आग में पका लिया जाता है तब वह मृणशिल्प कहलाते हैं. इसे हम टेराकोटा आर्ट के नाम से जानते हैं. मिट्टी के शिल्प का काम विश्व की प्राचीन कलाओं में एक है. मृण शिल्प कला छत्तीसगढ़ राजस्थान सहित अन्य कई राज्यों में पाई जाती हैं. पकाई गई मिट्टी से अनेक विविध वस्तुएँ प्राप्त होती हैं. छत्तीसगढ़ और विशेष रूप से बस्तर क्षेत्र में यह कला काफी प्रचलन में है. यहाँ पोला त्यौहार पर अनेक आकृतियों वाले पहिए, बैल आदि बनाए जाते हैं. बस्तर के मृण शिल्प की विशेषता उनकी शैली, आकार, अलंकृत सतह सज्जा व चमकदार पॉलिश है.

इस हस्तकला से परिचय व पुरातन कला को जीवित रखने के उद्देश्य से हमारी शाला मा. शा. आदर्शनगर में बच्चों को टेराकोटा आर्ट सिखाया जाता है. इस शाला में लगभग पाँच सालों से बच्चे मिट्टी के खिलौने बनाना सीख रहे हैं.

कक्षा आठवीं से कु. रोशनी, कक्षा छठवीं से कु. रेशमा मांझी जनजाति की छात्राएँ इस कला में निपुण हो गई हैं. इनके द्वारा बनाई मिट्टी की मूर्तियाँ व खिलौने एकदम सजीव लगते हैं. इन दोनों बहनों ने साबित कर दिया कि मेहनत व लगन के सामने अभाव कोई मायने नहीं रखता.

इन बहनों के द्वारा साँप, मछली, हाथी, कछुआ, शिवलिंग, गणेश, महात्मा गाँधी की प्रतिमा, भोजन पकाने के पात्र, दीपावली हेतु दीये व अन्य सजावटी वस्तुएँ भी बनाई गई हैं.

नवाचारी शिक्षिका स्नेहलता टोप्पो के मार्गदर्शन में इन छात्राओं ने मिट्टी के खिलौने बनाना सीखा है. शाला के अन्य छात्र छात्राओं द्वारा भी मिट्टी के खिलौने व पात्र बनाए जाते हैं.

बनाने की विधि-पहले खेत की चिकनी मिट्टी को भिगाकर रखा जाता है. फिर हल्के हाथों से मनचाहे खिलौने बनाए जाते हैं. इन्हें छाँव में सुखाते हैं और कुछ सूख जाने पर धूप में रखते है फिर चूल्हे की अंगार में रखकर कुछ देर पकाते हैं जिससे ये खिलौने मजबूत हो जाते हैं. और फिर इन खिलौनों को मनचाहे रंगों से रँग दिया जाता है.

मृणशिल्प कला कौशल द्वारा बच्चे न केवल अपनी कला का प्रदर्शन करते हैं बल्कि आय के दृष्टिकोण से भी यह कला बच्चे सीख रहे हैं.

मीठी वाणी

रचनाकार- लाल देवेन्द्र कुमार श्रीवास्तव

मीठी वाणी अमृत जैसी, सबका मन हरषाती है.
प्रिय लगती है ऐसी वाणी, अमृत सुधा बरसाती है..

सच वाणी यदि है कड़वी, अक्सर न हमको भाती है.
ऐसी वाणी सँभलकर बोलो, नहीं तो कटुता आती है..

मीठी वाणी हम बोले तो, दूजे भी प्रिय हो जाते हैं.
जिस वाणी में विषता हो, अपनों को भी नहीं सुहाते हैं..

मीठी वाणी प्यारी होती, प्रेम के पट देती है खोल.
ऐसी वाणी सदा सदा से, जग में होती है अनमोल..

मीठी वाणी बोल के हम, समाज में प्रिय हो जाते हैं.
आदर व सम्मान मिले हमें, यूँ आँखों में बस जाते हैं..

बच्चे बोले मीठी वाणी, बहुत ही अच्छे लगते हैं.
मीठी बोली सुनकर लोग, कितना प्यार करते हैं..

मम्मी की बोली होती मीठी, बच्चों का मन हर लेती हैं.
पापा क्रोध में भी हो, मीठे बोली से चुप कर देती हैं..

एक निवेदन सबसे मेरा, जब बोले मीठा बोलें.
कर्ण प्रिय लगे हर मानुष को, बोली में हम मिश्री घोलें..

मेरा देश है महान

रचनाकार- लाल देवेन्द्र कुमार श्रीवास्तव

गर्व बहुत होता है मुझको,
भारत माँ की हम संतान॥
फ़ख़्र से सीना चौड़ा होता,
लहराएँ है तिरंगा निशान..

सब बोलो जय-जय हिंदुस्तान.
सदियों से मेरा देश है महान..

बचपन से लेकर अब तक,
कानों में गूँजा है राष्ट्र गान.
तन मन मेरा खिल जाता है,
देश का करे कोई गुणगान..

यहाँ जम्हूरियत का शासन,
सम माने हम राम-रहमान.

कई जातियाँ मज़हब वाले,
पढ़े गीता गुरूग्रंथ कुरान..

राष्ट्र को कोई आँख दिखाए
हम करें उसे पहले सावधान.
फ़िर आदत से बाज़ न आए
मिटा देते उसका नामो-निशान..

सब बोलों जय-जय हिंदुस्तान.
सदियों से मेरा देश है महान..

सारे विश्व में भारत माँ का,
होता रहा है सदैव यशगान.
अब वह भारत नहीं रहा है,
कोई हमें दे अब फ़रमान..

महापुरुष यहाँ जो जन्म लिए,
पूरे जग को दिए ज्ञान-विज्ञान.
परोपकार करते हम सबका,
कभी न करते हैं अभिमान..

यहाँ वीरप्रताप शिवा है जन्में,
सम्राट अशोक हुए महान.
विश्व में हमारा है देश अनूठा,
धरा को हम दें माँ का सम्मान..

सब बोलो जय-जय हिंदुस्तान.
सदियों से मेरा देश है महान..

Merry Christmas

Poetess- Sapna Yadu

Merry Christmas merry Christmas
I am very happy. . ..
Santa Claus giving many gifts
So Nice and very pretty

X mas tree is ready for hanging many toys, *
See The cutie little star,
Enjoying girls and boys. **

Church is decorated
To pray The God Jesus, *
Lighting candles, reading Bible
All the Christian's. **

Children are very happy
Got new clothes and shoes, *
They are enjoying
Not hearing any excuse.

Everyone celebrating taking snacks
and drinking shakes, *
Mummies are busy in
Baking yummy cakes. **

Merry Christmas merry Christmas
I am so happy, *
Come soon back with this festival
I pray to God heartly. **

चित्र देख कर कहानी लिखो

पिछले अंक में हमने आपको यह चित्र देख कर कहानी लिखने दी थी -

हमें जो कहानियाँ प्राप्त हुई हम नीचे प्रदर्शित कर रहे हैं

अपर्णा वर्मा, भानुप्रतापपुर, कांकेर द्वारा भेजी गई कहानी

एक तालाब में बत्तख और उनके दो छोटे बच्चे रहते थे. वहीं पास ही मेंढकी भी अपने बच्चों के साथ रहती थी. बत्तख अपने बच्चों के साथ तालाब में तैरा करती थी जिससे बच्चे भी तैरने में कुशल हो जाएँ. मेंढक के बच्चे रोज उन्हें तैरते देखा करते थे. अभी वे छोटे थे इसलिए उन्हें पानी में जाने से डर लगता था, एक दिन बत्तखों की माँ ने मेंढक के बच्चों को देखा. वह उनके पास गई और उनसे पूछा कि बच्चो, तुम दोनों हमेशा पत्तों में ही क्यों बैठे रहते हो? क्या तुम्हें सैर करने का मन नहीं करता? तब उन बच्चों ने बत्तख को सारी बात बताई. बत्तख बच्चों की बात सुनकर मुस्कुराई, और फिर उसने मेंढक के बच्चों से प्यार से कहा कि क्या तुम दोनों मेरी पीठ पर सवारी करना चाहोगे? इस तरह तुम्हें डर भी नहीं लगेगा और मैं तुम्हे तालाब की सैर भी करा दूँगी. दोनों बच्चे यह बात सुनकर खुशी से चहक उठे और उन्होंने तुरंत हाँ कर दी. सैर करते करते बत्तख के बच्चों और मेंढक के बच्चों में बहुत अच्छी दोस्ती हो गई. आज मेंढक के बच्चों ने पहली बार पूरे तालाब की सैर की थी. वे दोनों अत्यंत प्रसन्न थे. उधर मेंढकी अपने बच्चों को ढूँढ़ रही थी पर उसे बच्चे नजर ही नहीं आ रहे थे, वह बहुत परेशान हो रही थी. जब उसकी नजर बत्तखों के झुंड पर गई तो वह उनके पास जल्दी से गई और इससे पहले कि वो बत्तख से अपने बच्चों के बारे में पूछती, दोनों बच्चे बत्तख की पीठ से उतर कर उसके पास आ गए. उन दोनों ने अपनी माँ को सारी बातें बताईं. मेंढकी अत्यंत प्रसन्न हुई और उसने बत्तख को धन्यवाद दिया. उस दिन से बत्तखों और मेंढकों में बहुत अच्छी दोस्ती हो गई.

रजनी शर्मा बस्तरिया द्वारा भेजी गई कहानी

होनजोक मेंढ़क

होन नाम के मेंढक ने अंगड़ाई ले कर जम्हाई ली. जोक नाम का मेंढक भी उसके पास अलसाया पड़ा था. बारिश के बाद कीचड़ में दोनो हाइबरनेशन काल का आनंद ले रहे थे. ये वह समय होता है जिसमें मेंढक कीचड़ में कई दिनों तक सुस्त पड़े रहते हैं.

होन और जोक दोनों का व्यवहार अन्य मेंढकों से बिल्कुल अलग था. न उन्हें किसी से मिलना और न ही किसी से बातें करना अच्छा लगता था.

तालाब में बतखें तैरती हुई आतीं तो भी वे उदासीनता से मुँह बनाये रहते. तट किनारे के नन्हे कीड़ों को देख देख कर नाक भौं सिकोड़ते रहते थे. जब नन्ही बतख पानी में छपाक-छपाक करती तो होन और जोक पानी के छींटों से बचने के लिए कमल के पत्तों की ओट में छिप जाया करते. गुनगुनी, गुलाबी धूप में वे दोनो कमल के पत्तों के उपर ही लेटे मिलते. बतखें खूब परिश्रम करतीं. बड़ी बतखें अपने और छोटों के लिये भोजन जुटाने मशक्कत करतीं थी. पर ये दोनो होन और जोक अजीबोगरीब व्यवहार किया करते थे. एक दिन नन्ही बतख ने पूछा कि तुम्हारा नाम क्या है? तो बुरा सा मुँह बनाकर कहा कि मेरा नाम होन और उसका जोक. इसका मतलब क्या होता है? दोनों ने कंधे उचकाते हुए कहा कि कोरियाई भाषा में होन का अर्थ होता है अकेला और जोक का मतलब समुदाय होता है. नन्ही बतख उन दोनों से दोस्ती करना चाह रही थी. उनके इस खुश्क जवाब से मुँह लटका कर लौट गई. इनकी बातें सुनकर बड़ी बतख सोचने लगी कि सच में ये दोनो तो होनबैप अर्थात अकेले ही खाने वाले हैं. कोरियाई भाषा में अकेले खाने वाले को होनबैप कहा जाता है. और ये होनसूल भी हैं. अर्थात अकेले ही पीते भी हैं. और आश्चर्य की बात है कि ये अकेले खेलते भी हैं अर्थात् होननोल भी हैं.

पर समय हमेशा एक सा नहीं रहता. कोरोना काल में कई प्रकार की कठिनाईयों का सामना इन जलीय जंतुओं को भी करना पड़ा. अब लोग तालाब में जलीय जीवों को चारा डालने कम ही आते थे. और इन पर आश्रित कीड़ों की संख्या कम होने लगी. भला ऐसे में बतखों की पूरी कौम को पर्याप्त भोजन कैसे मिल पाता? पर सारे बतख मिल-बाँट कर जितना भी मिलता उसे संतोष भाव से ग्रहण करते और संतुष्ट और प्रसन्न रहते. बड़ी बतख देखती थी कि होन और जोक मेंढक तालाब में हैं या नहीं. यह उसका फर्ज था आखिर वह तालाब की सबसे वरिष्ठ सदस्य जो थी.

शुरू शुरू में दोनो मेंढक फुदकते दिखते थे पर धीरे धीरे उनकी सेहत कमजोर पड़ने लगी. भोजन के अभाव में उनका शरीर शिथिल होने लगा. तालाब के अन्य सदस्यों को उन दोनों का व्यवहार नागवार था. सो उन सबने उन दोनों की मदद करना छोड़ दिया था.

होन की आँखे बाहर निकली जा रही थीं और जोक अर्धमूर्छित हो गया था. वे दोनो लगभग मरणासन्न हो गये थे. तभी अचानक अधमुँदी आँखों से दोनों ने देखा कि बड़ी बतख अपनी चोंच में कुछ दबाये तेजी से उनकी ओर आ रही है. और नन्ही बतख भी उसके पीछे आ गयी.

बड़ी बतख ने मनुहार करके उन्हें खिलाया, पिलाया अब जाकर उनकी जान में जान आई. उन दोनों की ऑखें भर आईं. उन्होंने बतख से पूछा हम दोनों ने आप सबसे इतना बुरा व्यवहार किया पर आपने फिर भी हमारी मदद की.

बड़ी बतख ने दुलार से कहा कि तुम दोनो भी हमारे ही परिवार के सदस्य हो. कोई एक सदस्य भूखा रहे यह हमारे उसूलों के खिलाफ है. पश्चात्ताप और ग्लानि से होन और जोक का सिर झुका हुआ था.

बड़ी बतख ने अपने पंखों में उन दोनों को समेट लिया और खूब दुलार किया. यह देखकर तट किनारे खड़े कीड़े भी खुशी से किलक पड़े और किलोल करने लगे. सभी कहने लगे कि आज से इन दोनो का नाम होन जोक के बदले "हम जोली"होगा.

सब खिलखिला पड़े, पूरे तालाब में खुशी की लहर फैल गई और कोमल स्मित वाली तरंग सबके चेहरों पर दौड़ गई.

संतोष कुमार कौशिक द्वारा भेजी गई कहानी

बतख और मेंढक

पहाड़ों के बीच एक तालाब में बतख एवं उसके बच्चे रहते थे. एक दिन जब बतख अपने बच्चों के साथ तैर रही थी तभी तालाब के किनारे बैठा मेंढक उन्हें देखकर हँस रहा था. बतख ने पूछा-मेंढक भैया, तुम क्यों हँस रहे हो? मेंढक बोला, इन बच्चों को देखकर मुझे हँसी आ रही है. ये बच्चे मेरे बच्चों की तरह नहीं तैर सकते. हा हा हा.. . .

मेंढक के चिढ़ाने से माँ बतख ने क्रोधित होकर मेंढक से कहा- अहंकार अच्छा नहीं है. बच्चों के तैरने की प्रतियोगिता कर लेते है. देखते हैं कि प्रतियोगिता में कौन जीतता है. मेंढक ने तैरने की प्रतियोगिता की बात स्वीकार कर ली.

अगले दिन नदी के जीव जंतु बतख एवं मेंढक के बच्चों की प्रतियोगिता देखने के लिए आ गए. प्रतियोगिता प्रारंभ हुई. मेंढक के बच्चे कुछ दूर तक उछल-उछल कर तैरे और बतख के बच्चों से आगे निकल गए. लेकिन कुछ देर बाद मेंढक के बच्चे थक गए और उनके तैरने की गति धीमी हो गई. बतख के बच्चे धीरे-धीरे तैरते रहे और आगे निकल गए. बत्तख के बच्चों ने प्रतियोगिता जीत ली.

मेंढक का अहंकार नष्ट हो गया और वह शर्मिंदा हो गया. माँ बतख ने कहा मेंढक भैया, सभी प्राणियों में अलग-अलग गुण होते हैं. कोई तैरने में, कोई चलने में, कोई दौड़ने में, कोई उड़ने में, कोई कूदने में, कोई उछलने में तेज होता है. किसी का उपहास नहीं करना चाहिए. मेंढक बोला-तुम ठीक कहती हो, मैं शर्मिंदा हूँ. अब यह गलती नहीं करूँगा.

यशवंत कुमार चौधरी द्वारा भेजी गई कहानी

एक तालाब था जिसमें विभिन्न जलीय जीव-जंतु निवासरत थे. तालाब में बत्तखें सुबह से शाम तक तैरते हुए अपना भोजन प्राप्त करती थीं. उसी तालाब में मेंढक भी उछल- कूद करते रहते, कभी पानी में, कभी जलीय पौधों की पत्तियों पर छिप जाया करते तो कभी तालाब के किनारे मेड़ पर जा बैठते. उसी तालाब के किनारे जोंक भी रहा करती थीं जोंक अक्सर शिकार की तलाश मे रहती थीं सभी जोंकों से काफी भयभीत रहते थे. जोंक जंतुओं के शरीर पर चिपक कर खून पिया करती थीं जिससे जंतु कमजोर हो जाया करते थे कुछ की मौत भी हो जाती थी. तालाब में कुछ जीव शाकाहारी थे तो कुछ मांसाहारी. तालाब में जलीय पौधे भी काफी विकसित थे. सभी प्रकार के जीव -जंतु और जलीय पौधों की उपस्थिति से तालाब का पारिस्थितिकी तंत्र संतुलित था. तालाब काफी खुबसूरत था. सभी अपने काम में मगन रहते थे. लोग तालाब के किनारे बैठकर यह नजारा देखा करते. सभी जीवों की जीवन-शैली अलग-अलग होती है पारिस्थितिकी तंत्र का संतुलन बनाए रखना जरुरी है.

अगले अंक की कहानी हेतु चित्र

अब आप दिए गये चित्र को देखकर कल्पना कीजिए और कहानी लिख कर हमें यूनिकोड फॉण्ट में टंकित कर ई मेल**kilolmagazine@gmail. com** पर अगले माह की 15 तारीख तक भेज दें. आपके द्वारा भेजी गयी कहानियों को हम किलोल के अगल अंक में प्रकाशित करेंगे

<u>नदियाँ</u>

रचनाकार- अनिता चंद्राकर

कलकल कलकल इठलाती जाती,
निर्मल नदिया की धार.
हर चुनौती को स्वीकार करती,
वो नहीं मानती कभी हार.
अविरल बढ़ते जाती अपने पथ पर,
करती बाधाओं को पार.
दिखाती रौद्र रूप अपना,
जब हम करते प्रकृति से छेड़छाड़.
जीवनदायिनी माता हैं नदियाँ,
करती धरा का सुंदर श्रृंगार.
शीतल जल से प्यास बुझाती,
इनसे ही है हरा-भरा ये संसार

भारत देश हमारा

रचनाकार- अनिता चंद्राकर

गंगा यमुना कलकल गाती, बहती अमृतधारा है.
देखो मंदिर, मस्जिद, गिरजाघर, हर्षित गुरुद्वारा है..

कृष्ण-राम की पावन भूमि, गणपति सबका दुलारा है.
जन्मी सती, सीता सी नारी यहाँ, दर्श दीवानी मीरा है..

महापुरुषों की गाथा अमर, ये देश हमको प्यारा है.
नानक, गौतम सीख देते, संतों का यहाँ बसेरा है..

तुलसी, सुर, जायसी को पढ़ो, ज्ञानमार्गी कबीरा है.
गीता, बाइबिल, कुरान, वेद, पुराणों का सहारा है..

पूजा, कीर्तन, अरदास गूँजे, सबने इष्ट को पुकारा है.
है जाति धर्म की विविधता यहाँ, पर सबमें भाईचारा है..

कुकुर

रचनाकार- बलदाऊ राम साहू

घर मा पोसे - पाले कुकुर
दूध - भात तैं खाले कुकुर.

पर ल तैं हर गजब डरवाथस
अबड़ हिम्मतवाले कुकुर.

तोर आय ले नइ आये कौनो
भूँक-भूँक डरना ले कुकुर.

मैं ह आये हौं घूम-घाम के
पूछी अपन हलाले कुकुर.

सफलता की कहानी- व्यवहार में परिवर्तन

बालिका का नाम- नागेश्वरी बघेल

संस्था का नाम- पोर्टा केबिन बालाटिकरा, सुकमा

कक्षा - आठवीं

छत्तीसगढ़ के सुकमा जिले में बसे ग्राम पुसपाल की नागेश्वरी बचपन से चंचल स्वभाव की थी. नागेश्वरी के परिवार में उसकी माँ, बड़ी बहन भुनेश्वरी एवं छोटी बहन हैं. माँ खेती, मजदूरी करके परिवार का पालन- पोषण करती है. बड़ी बहन भुनेश्वरी पोर्टा केबिन में पढ़ाई कर रही है और छोटी बहन गाँव के आँगनबाड़ी केन्द्र में पढ़ती है.

नागेश्वरी ने अपने गाँव से 37 किमी दूर बालाटिकरा के पोर्टा केबिन में कक्षा- तीसरी में प्रवेश लिया था. नागेश्वरी झगडालू स्वभाव की थी. उसकी किसी से भी नहीं बनती थी और न ही कोई उससे दोस्ती करना चाहता था क्योंकि वह अक्सर मारपीट करने लगती थी. यहाँ तक कि नागेश्वरी की अपनी बड़ी बहन भुनेश्वरी से भी नहीं बनती थी. मारपीट की आदत के कारण कोई भी नागेश्वरी के साथ रहना नही चाहता था. नागेश्वरी ज्यादातर कक्षा में अनुपस्थित रहती थी. वह कक्षा के समय में पोर्टा केबिन में छुपकर रहा करती थी जहाँ से उसे कोई देख ना पाए और स्कूल की छुट्टी होने पर अपने कक्ष में आ जाया करती. एक बार नागेश्वरी पोर्टा केबिन में किसी को बताए बिना अपने घर चली गई और अपनी माँ से कहा कि वह पढ़ना नहीं चाहती.

माँ ने उसे किसी तरह समझाकर दोबारा पोर्टा केबिन भेजा किन्तु उसका मन पढ़ाई मे बिल्कुल भी नहीं लगता था और न ही वह कभी स्कूल की अन्य गतिविधियों में भाग लेती थी. शिक्षक भुनेश्वरी का उदाहरण देकर उसे अपनी बहन की तरह बनने की बात समझाने की कोशिश करते किन्तु नागेश्वरी पर इन सबका कोई असर नहीं पड़ता था.

जब नागेश्वरी सातवीं कक्षा में थी तब पोर्टा केबिन में जीवन- कौशल सत्रों का संचालन प्रारंभ हुआ. अधीक्षिका श्रीमती लक्ष्मी वेक्को मरकाम द्वारा संचालित किए जाने वाले जीवन- कौशल सत्रों में नागेश्वरी शामिल होने लगी क्योंकि इसमें उसे पढ़ाई का डर नहीं रहता था. जीवन कौशल सत्रों में समूह में रहकर काम करना, हमदर्दी, भावनाओं को समझना एवं व्यक्त करना, समस्या समाधान, प्रभावी सम्प्रेषण जैसे विषयों पर गतिविधियों के माध्यम से चर्चा की जाती थी. अधीक्षिका द्वारा नागेश्वरी को व्यक्तिगत रूप से भी मार्गदर्शन दिया गया कि वह अपने झगड़ालू स्वभाव के कारण क्या- क्या खो रही है उसे अपने इस स्वभाव को बदलने के लिए काम करने की आवश्यकता है. अगर वह पढ़ाई में रूचि लेगी तो वह किस तरह अपने सपनों को पूरा कर पायेगी.

नागेश्वरी पर जीवन-कौशल सत्रों एवं अधीक्षिका के मार्गदर्शन का सकारात्मक प्रभाव पड़ने लगा. उसके स्वभाव में धीरे- धीरे परिवर्तन आने लगा. अब उसने नियमित रूप से कक्षा में जाना शुरू किया, सहपाठियों से दोस्ती शुरू की. धीरे -धीरे वह अन्य गतिविधियों जैसे खेल, नृत्य एवं नाटकों में भी भाग लेने लगी.

अधीक्षिका का कहना है कि जीवन-कौशल सत्रों के बाद नागेश्वरी के व्यवहार में बहुत परिवर्तन आया है. वह अब स्कूल, एवं जीवन-कौशल की गतिविधियों में उत्साहपूर्वक भाग लेती है. उसके आत्मविश्वास में वृद्धि हुई है. नागेश्वरी अपनी पढ़ाई पूरी कर शिक्षक बनना चाहती है.

वंदना

रचनाकार- महेन्द्र देवांगन "माटी"

करूँ वंदना नित्य ही, हे गणनायक राज.
संकट सबके टाल दो, सिद्ध होय सब काज..

काम मिले हर हाथ को, नहीं पलायन होय.
भूखा कोई न रहे, बच्चे कहीं न रोय..

कोरोना संकट हटे, बीमारी हो दूर.
स्वस्थ रहे सब आदमी, न हो वो मजबूर..

भेदभाव को छोड़ कर, रहे सभी अब साथ.
नवयुग का निर्माण हो, हाथों में हो हाथ..

करूँ आरती रोज ही, आकर तेरे द्वार.
करो कृपा गणराज जी, वंदन बारंबार..

जन्मदिन

रचनाकार-सपना यदु

आया जन्मदिन आया, ढेरों खुशियाँ लाया.
लड्डू और पकवान बने हैं, मुँह में पानी आया..

रंग बिरंगे गुब्बारे सजे हैं, नए कपड़े भी लाया !
आया जन्मदिन आया, ढेरों खुशियाँ लाया..

पप्पू, टिंकू, सोनू, मोनू सभी दोस्तों को बुलाया.
सुंदर-सुंदर, प्यारे-प्यारे सभी ने है उपहार लाया..

दीपक, फूल, चंदन लेकर, माँ ने है थाली सजाया.
स्नेह भरा फिर चुंबन लेकर, माथे पर टीका लगाया..

एक-एक कर सब ने आकर, अपना हाथ है मिलाया !
जन्मदिन की देकर बधाई, सबने ताली खूब बजाया..

तुम बहुत याद आते हो

रचनाकार- नरेन्द्र सिंह नीहार, नई दिल्ली

मेरे प्यारे स्कूल!
तुम बहुत याद आते हो.
अक्सर मेरी पलकों में,
मेरे साथ सो जाते हो.
सपनों में तैरते हो,
नज़दीक मुझे बुलाते हो.
खेलकूद शोखियाँ शरारतें,
बादस्तूर चलती हैं.
मिड डे मील की खुशबू से,
जीभ भी मचलती है.
सामने गुरु जी को देखकर,
शीश झुकाता हूँ.
उनका स्नेहिल हाथ,
अपने सिर पर पाता हूँ.
अचानक आँख खुलने पर,
तन्हा तड़पाते हो.
मेरे प्यारे स्कूल!
तुम बहुत याद आते हो..

सजीव एंव निर्जीव

रचनाकार- पेश्वर राम यादव

हमेशा अपने शिष्यों को परखने की आदत और अनुभव के आधार पर अध्ययन में मनोरंजक, शिक्षाप्रद, क्रियाकलाप एवं गतिविधि आधारित शिक्षा देने में माहिर थे एक गुरूजी. एक बार अपने शिष्यों को सामूहिक कार्य के अंतर्गत उन्होंने सूखा तालाब और पानी भरा तालाब ढूँढकर आने को कहा. सभी शिष्य तालाब की खोज में निकल पड़े. उन्हें एक सूखा तालाब मिला. तालाब में घोंघे के टूटे शल्क सूखी लकड़ी की टहनियाँ, कंकड़ पत्थर, मिटटी में लिपटे हुए सूखे पत्ते एवं बड़ी बड़ी दरारें स्पष्ट दिखाई दे रही थीं. तालाब के आसपास की जमीन भी सूखी थी.

फिर वे सभी गुरूजी की आज्ञानुसार पानी से भरे तालाब की खोज में आगे बढ़े. कुछ दूर चलने पर एक पानी वाला तालाब दिखाई दिया. सभी के मन में एक स्फूर्ति, शरीर में एक उत्तेजना सी जागृत हुई. तालाब में लबालब पानी भरा है, आसपास हरे भरे पेड़ पौधे है, तट पर फलदार आम का पेड़, तालाब के अंदर मछलियाँ तैर रही हैं, मेंढक उछलकूद कर रहे हैं. अन्य जलीय जीव जंतु भी पानी में दिखाई दे रहे हैं. जलीय पौधे भी दिखाई दे रहे हैं.

दोनों दृश्य देखकर सभी शिष्य आश्रम लौट आए. वे सब गुरूजी के पास गए और आँखों देखा हाल गुरूजी को सुनाया. गुरूजी शिष्यों की बातों को सुनकर प्रसन्न हुए. उन्होंने कहा जो कुछ तुम लोगों ने सूखे तालाब में देखा, पत्थर, सुखी पत्तियाँ, घोंघा के शल्क, सूखी लकड़ी एवं मिटटी की दरारें ये सभी निर्जीव हैं. ये चल फिर नहीं सकते. उसी तरह पानी से भरे तालाब में मेंढ़क, मछली, सांप, जोंक, जलीय जीव, पौधे एवं तट में स्थित पेड़-पौधे यह सब सजीव हैं. जिनमें जैविक क्रियाएँ होती हैं. इस तरह से गुरूजी अपने शिष्यों को नैतिक शिक्षा के साथ साथ गतिविधि आधारित शिक्षा भी देते थे.

गाँव के सुरता

रचनाकार- नेमेन्द्र कुमार गजेन्द्र

आथे सुरता अब हमर, पुरखा मन के गाँव.
आमा अमली संग मा, बर पीपर के छाँव..
बर पीपर के छाँव, जिहाँ मन होवय चंगा.
तरिया डबरी ताल, गाँव के पबरित गंगा.
शहर-नगर के शोर, कान ला कहाँ सुहाथे.
निरमल नीरव गाँव, अबड़ के सुरता आथे..

हारेगा कोरोना

रचनाकार- महेन्द्र देवांगन "माटी"

संभल जाओ हे मानव अब,
विपदा भारी आई है.
कोरोना का संकट देखो,
पूरी दुनिया पे छाई है..
कोई नहीं बचाने वाला,
खुद को तुम्हे बचाना है.
छोड़ो धन के लालच को अब,
दूरी तुम्हें बनाना है..
समझा कर सब हार गये हैं,
शासन और प्रशासन भी.
मंदिर-मस्जिद बंद पड़े हैं,
डोल रहा है आसन भी..
नहीं भीड़ में जाओ अब तुम,
यदि परिवार बचाना है.
बदलो सब जीने के ढँग को,

गुलशन नया सजाना है..
हारेगा कोरोना एक दिन,
बीमारी ये जायेगी.
जीत हमारी निश्चित होगी,
फिर से खुशियाँ आयेगी..

भाखा जनऊला

भाखा जनउला (छत्तीसगढ़ी वर्ग पहेली)

रचनाकार - दीपक कंवर (शिक्षक)

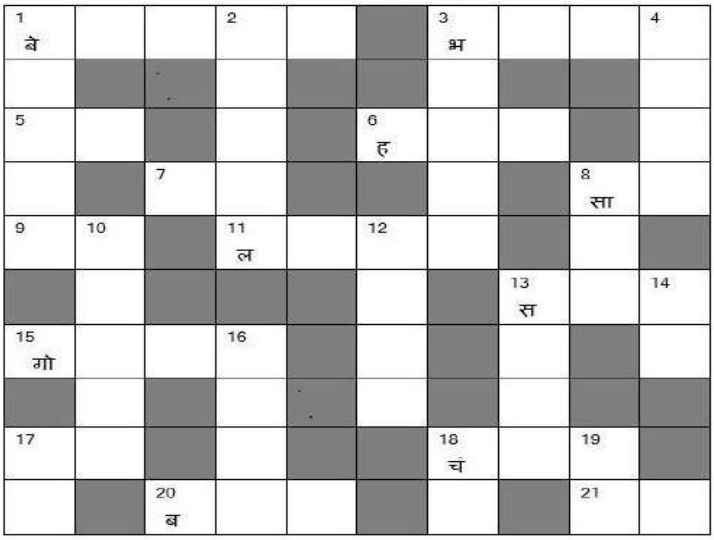

बाएँ से दाएँ:- 1. बिकाऊ 3. आशंका 5. बदमाश 6. अचानक 7. चना, मक्के का बुना हुआ 8. सब्जी 9. बाजार 11. बातुनी 13. सड़ा हुआ 15. कोटवार 17. कल 18. चबूतरा, चौरा 20. बैगा 19. मट्ठा

ऊपर से नीचे:- 2. उदण्ड 3. ऊंची आवाज मे बोलने वाला 4. लगातार 10. खोजने योग्य 12. धूप 13. हमनाम/एक ही नाम का 14. हड्डी 16. खीर 17. क्यों, किसलिए 18. चाँद 19. छ. ग. मे किस भगवान को भांजा मानते हैं

पिछले भाखा जनउला का उत्तर

1 अं	त	2 स		3 मुं	ह	अ	ख	4 रा	
		र		खा				ह	
	5 सं	ग	वा	री		6 चि	ट	प	ट
	ख					वा		ट	
7 क	री	ल		8 अं	ग	र	खा		
रु				धि			9 तु	10 म	न
	11 गु	इ	री	या				त	
	र			12 र	13 ह	न		वा	
14 ती	तु	र			म			15 र	16 हा
	र				17 न	र	वा		ना